गीतांजली

अनुवादक :

रामनाथ व्यास 'परिकर'

प्रकाशक
डॉ० मोतीलाल मेनारिया
संचालक
राजस्थान साहित्य अकादमी
उदयपुर।

प्रथम संस्करण
१९६१

मूल्य
दो रुपये पचास नये पैसे

मुद्रक
जगन्नाथ यादव
अध्यक्ष
केशव आर्ट प्रिण्टर्स
अजमेर।

प्रकाशकीय निवेदन

*

स्व० रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कृतियाँ आज भारतीय वाङ्मय में ही नहीं, अपितु विश्व-साहित्य में समादरणीय हैं। विभिन्न भाषाओं में उनके अनुवाद हुए हैं। इतना ही नहीं, कई विद्या-व्यसनी तो रवीन्द्र, शरत् और बंकिम का साहित्य समझ पाने के लिये ही बंगला सीखते हुए देखे गये हैं।

साहित्यकार चाहे किसी भी भाषा में रचना करे, वह साहित्य मात्र उसी भाषा-भाषी क्षेत्र के लिये न होकर समूची मानवता के लिये होता है। इसीलिये उसकी आवाज को जन-जन तक पहुंचाने का दायित्व निभाया जाता है और इसीलिये भाषा और लिपि के एकीकरण की बात सोची जाती है।

राजस्थान साहित्य अकादमी ने रवीन्द्र शताब्दी-समारोह के अवसर पर यह आवश्यक और उपयुक्त समझा कि विश्व-कवि की कुछ रचनाओं का राजस्थानी-अनुवाद प्रकाशित किया जाय प्रस्तुत प्रकाशन उसी निश्चय की क्रियान्विति है। अनुवाद या रूपान्तर का काम वस्तुतः बड़ा कठिन है भाषाओं का जन्म और विकास वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक आधारों पर होता है। अतः एक भाषा की अभिव्यंजना किसी दूसरी भाषा में पूर्णरूपेण समाहित नहीं हो पाती। फिर भी श्रेष्ठ रचनाओं के अनुवाद किये जाने के महत्त्व से असहमति प्रकट नहीं की जा सकती।

प्रस्तुत प्रकाशन अपने उद्देश्य में कितना सफल रहा है, इस मूल्यांकन की अपेक्षा हमसे नहीं, पाठकों से ही की जानी चाहिये।

डॉ० मोतीलाल मेनारिया
संचालक,
राजस्थान साहित्य अकादमी,
उदयपुर।

रामनाथ व्यास 'परिकर'

जनम-स्थान : बीकानेर
जनम-तिथि : १५ मई १९२९ ई०
पिताजी रो नांव: श्री बालमुकुन्दजी व्यास

गीतांजळी रा अनुगायक श्री परिकरजी राजस्थानी अर हिन्दी रा जाणीता कवि अर लेखक है। इणांरा प्रेरणास्रोत राजस्थानी भासा रा मोटा महारथी स्वर्गीय श्री सूर्यकरणजी पारीक है। पारीकजी सूं इणां नै साहित सेवा री जका विरासत मिळी है उण नै निभावण मे परिकरजी मा-राजस्थानी री सेवा रो प्रण पाळ रया है। आप चार खंड-काव्य रणत-भंवर, हिवड़ै रा बोल, जीवण जागे, अर रवींद्र दर्शन-शतक. नांवां सूं कविता रा न्यारा-न्यारा सरूपां रो परस करयो है। परिकरजी री रस-सृस्टि रो भळक उणांरे गीतिरूपकां, दूवां, अर रेखा चितरामां में सांगोपांग रीत सूं आंकीजी है।
एम० ए० पास करण रै बाद कवि रो सामाजिक अर सार्वजनीक जीवण, सरू हुयो, अर लगभग ६ बरसां तक राजस्थान में न्यारा-न्यारा अनुभव प्राप्त करया। अजकाल आप सहकारिता रै विकास-कार्य में लाग्योड़ा है।

लेखणी रा बोल

गुरुदेव रवींद्रनाथ टागुर री गीतांजळी रा गीतां आधुनिक विश्व-साहित्य में अनोखो पद पायो। इण गीतां री भावभोम में भारत री आतमा रा दरसण हुवै। गुरुदेव रै इण जुगां-जुगां रै सनेसै नै राजस्थानी भाषा-भासी जनता रै सनमुख धरतां मनै अणपार हरख हुवै। औ तो नेणां रै जळ री एक परनाळो है, जिण में करुणा माधुरी अर समर्पण री हिलोरां उठै—अर कवीन्द्र रै मनड़ै रा ऊजळा भाव सजीव भागां ज्यूं पिरगटै। ईं'यां जणै-जणै रै हियड़ै नै मोवै। शुण जाणे ओ थांनै किसाक लागसी।

विश्वकवि नै राजस्थानी भासा घणी रुचती, अर उणा इण भासा रै वीर, सिणगार अर लोक-साहित्य री घणी सरावना करी। सौभाग सूं राजस्थान अर बंगाल रो संबंध घणो जूनो अर गाढो रयो है। राजस्थान री वीरभोम री जस बंगला भासा रा मानीता विद्वानां आपरी लेखणी सूं घणो फूटरो आंक्यो अर अठै रै इतिहास री कथावां बंगाल में साहित्य-सरजन नै घणी प्रेरणा दीनी है। राजस्थानी अर बंगला भासावां एक-बीजी रै घणी नेड़ी पड़ै, अर एकै री ओज दूजी री माधुरी सूं मिल'र भारतमाता री रूड़ी आरती जुगां-जुगां सूं उतारै।

राजस्थानी में गीतांजळी रै अनुवाद करण सूं पैलो, राजस्थानी रा मानीता विद्वानां अर लेखकां सूं आधुनिक गद्य रै सरूप रै विसै में मैं घणीवार परचावां

करी, अर आखर हूं इण निरणै माथै पूग्यो कै राज-स्थानी रा न्यारा-न्यारा इलाका में बोलचाल री भासा में सदा सूं ई थोड़ो-घणो भेद रैयो है, अर हाल ई है, पण मारवाड़ री भासा गद्य-रचना खातर आदर्स मानीजणी चइजै। इणरो कारण मारवाड़ी री मीठास, प्रसाद-पूरण सैली अर व्यापक सबद-सगती है। जिण सूं श्री अनुवाद, मूळ बंगला गीतांजळी सूं मारवाड़ी री बीकानेरी सैली में कीनो है। राजस्थानी जनता नै बंगला भासा रै गौरवपूरण साहित्य रै अनुसीलन री, अर भारतीय संस्कृति रै अंतरतम नै समझण री मौको गीतांजळी रै इण अनुवाद सूं मिल सकसी, इसी म्हारी मानता है।

रूड़ी, घण-मूंघी, अर कल्पनासील सहज उकती इण गीतांरी विसेसता है। काव्य में जीवण री सांचली सरूप पिरगट करण में रवींद्र बेजोड़ है, उणां अणंत जीवण-व्यापार री विसद विवेचन सांगोपांग रीत सूं करयो है। मन री गोपन विरत्यां री सहज उद्‌घाटण, करण में रवीन्द्र अत्यन्त सफळ हुया। भावां नै वाणी में उतार'र कवि आपरी कलम रै जादू सूं एक नुंवो भावलोक सिरज्यो है। धिन है रवीन्द्र री कविता! जका पाठक रै मन नै खांच'र आपरै सुरां में सुर मिला'र गावण नै विवस करै।

एक अनोखो रस-संचार हुवै, गीतांजळी रा मरम-भेदी सबदां री अमर झणकार सूं भावभगी आ भावुकता चमत्कारां री तो गीतांजळी एक तरंगणी है, जिण में मारग माथै वैवती अणत भाव-लैरयां किलोळां करती आपरै दिस्ट मारग माथै वैवती जावै। बीच-बीच में अलंकारां री छटा अर ओपमा जोवतां ई बणै। कवि इसी मनोरंजक बारीकी सूं दिरस रै असर नै बधावै कै आंख्यां रै आगै सजीव रूप धरयां, वा वस्तु अथवा दिरस जीवतै-जागतै चितराम ज्यूं आपरै रंग-बिरंगै ठाट माथै नाचण लागै।

गीतांजळी में एक अपणायत है।...... आ जणैं-जणैं रै हिवड़ै नै मोवण-हाळी जीवण-पोथी है-जिणमें संजोग-वियोग, हरख-सोग आंसू-मुळकण, प्रेम-धिरणा, चिन्ता-कामना, जीवन-मरण अर सुख-दुख रा विरोधी भावां नै एक दूजै रा पूरक बणा'र संसार री सगळी रचना रो सुगणो सरूप ले'र कवि गीतां में दरसै। सागै-सागै धरम-करम, माया-बैराग, भगती-ग्यान, मुगती-प्रवृत्ति रा अळूफां नै सुळकांवतो जावै। रवींद्र री हिरदै जीवण सूं प्रेम करतो, जीवण री वाणी वोले अर हरेक मन-प्राण में जीवण री प्रेम जगावै। गीतां री सेज विरती में कविता अर दरसण री एक अनोखो मेळ दीसै।

टावरां री रम्मत सूं ले'र प्रेम्यां री उडीक तांई इण पोथी में सीधी-सादी भासा रा वोलां सूं अटपटै रहस्य रा भेद खुलै। भगत मिंदर री पुजारी, पिया री वाट जोंवती प्यारी, अर मालक री वंदगी में ऊभी वंदी, अै सगळा छाया-मातर ई तो है इण जगत रै सांचलै सरूप रा—जिणमें विरम अर जीव रा मेळा लागता रैवै। कवि वीं एक विराट रा दरसण जगत रै सरव धंधा में पग-पग माथै हंसतै-रोंवतै मानखै नै करायां जावै। जलम सूं ले'र मिरतू तांई सगळा दिरस इसी अनोखी छिब में आंक्या है, कै एक पूरण-काम जीवण री मरम इण में पिरतख लखावै। आत्मा रा वोल, मन रा वेगां में चढ़ता-उतरता हिवड़ै री राग सागै जलम जलमांतर रा छंदां में गाईज्या है जिणसूं अेक अपूरव सुख नै जोंवतो माणी आखर आपरी मिनखा-जूण री अभलाखा री सार पावण में समरथ हुय जावै। इसी है गीतांजळी री सनेसो! जिणमें दुख, भौ, निरासा सूं डरतो जीव, जीवण री इच्छा नै मरण रै मोव में बदल्योड़ी देखै, अर सुख चांवतो वौ दुख नै वरण लागै।

भारतीय साहित, दरसण अर संस्कृति री आ पोथी एक अनोखी रसमयी निरवेणी है। हिरदै में उदात भावां री पुरणा अर गुंथी-गुंथी सद्वित्त्यां री जागरण इणसूं हुवै।

राजस्थानी भाषा अर साहित रा अमणी म्हारा स्वर्गीय पूज्य काकाजी सूर्यकरणजी पारीक री अणथक साहित-सेवा सूं प्रेरणा लेय'र इण अनुवाद जलम पायो। ठाकुर सा'ब रामसिंघजी अर स्वामी नरोत्तमदासजी रो म्हारै माथै हाथ रैयो, जिणसूं गीतांजळी रो औ सरूप आपरै सामी हाजर है। म्हारा साथी लेखकां सूं मनै घणो उछाव मिल्यो, जिणमें सर्व श्री रावतजी सारस्वत, चन्द्रसिंघजी, मेघराजजी मुकुल, बृजमोहनजी जावलिया अर राणी लक्ष्मीकुमारीजी चूंडावत री अणमोल राय मनै मिलती रैयी। मूळ री मरम समझण में कप्तान श्री प्रफुल्लचन्द्रजी सेन सा'ब र जोग मनै मिल्यो जिणरो आभारी हूं।

इण अनुवाद में जका कंई कसर रैयी हुवै, उणरो दोस म्हारो, अर जे कंई जस मिलै तो वो गुरुदेव रै अमर नांव री गिणीजे। इण पोथी सूं आधुनिक राजस्थान गद्य रै सरूप-निरधारण में जे रंचक सेवा होसी तो हूं मनै धिन-धिन मानसूं।

व्यास भवन,
सोनगिरो कूवो,
बीकानेर, राजस्थान
महाशिवरात्र सं० २०१४ वि०

— रामनाथ व्यास परिकर'

गात-क्रम

सबद-परस-रस-रूप, गंध मरम गीतांजळी।
भावलोक रा भूप, जै गुरुदेव रविंद री।

—'परिकर'

अेक

[आमारे तुमि अशेष करेछ]

•

मनै अणंत बणायो आ तो थारी लीला। ई काया रै नासवान भांडै नै तूं जीवण-जळ सूं भर-भर घड़ी-घड़ी रीतो कर्‌यां जावै।

ई नान्ही बांस री बांसड़ली नैं कित्ताई घाटी-डूंगरा में लियां-लियां तूं फिरै, अर इणमें सुर फूंक'र नित नुंवी-नुंवी तान बजायां जावै।

म्हारो छोटो'सोक हिवड़ो थारै हाथां री अमर पंपोळ सूं अणपार हरख रै मार्‌यो नाचण लागै, अर म्हारी वाणी मूंघा बोल ऊथळै।

रातदिन थारी अणगिणत बगसीसां म्हारै नान्है हाथां में आ'मार पड़ै।

जुगां रा जुग बीत्यां जावै, तूं हाथ भर्‌यां जावै अर हूं रीतै रो रीतो ई रै जावूं।
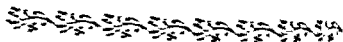
•

दोष

तीन

[तुमि केमन करे गान कर जे गुणी]

हे गुणी ! तू इसो कियां गावै ? थारी राग रा भेद हूं कंइ जाणूं । हूं तो इचरज-भरयो सुणूं अर कोरो सुण्यां ई जावूं ।

थारै सुरां रो चानणो अगजग नैं जगमग करै । थारै सुरां रो बायरो गिगन-मंडळ में रमै । थारै सुरां री गंगा मारग रा रोड़ा भांगती बगबगाट करती बैवै ।

म्हारो मन करै, थारा आं सुरां में सुर मिला'र गावूं । पण हाय ! म्हारै कंठां में बै सुर कठै ?

हूं कैवणो कंइ चावूं, पण कैवते बोल नीसरै नंइ, अर म्हारा प्राण हार परा कूकण लागै । थारै सुरां रो जाळ गूंथ'र, तै म्हारै हिवड़ै नै किसै फंदे में फसा नाख्यो ?

●

च्यार

[आमार सकल अंगे तोमार परश]

हे म्हारै हिवड़ै रा जिवड़ा !
म्हारी काया नै हूं निरमळ राखसूं, आ जाण'र कै म्हारै अंग-अंग माथै थारो जीवंत परस रात-दिन रैवै।
म्हारै मन'र-ध्यान सूं सगळी चिंता छोडण अर कूड़-कपट काडण री चेस्टा करसूं, आ जाण'र कै म्हारै मन में ज्ञान रो दिवलो संजोयां तूं बिराजै।
म्हारै मन नै हूं काबू में राखसूं, अर म्हारा सगळा कुटळ बैर-भाव प्रेम रै बळ सूं निरमळ कर नाखसूं, आ जाण'र कै म्हारै हिरदै में थारो चिर-कामण माण्योड़ो है।
म्हारै सगळा कामां में थारी ई सगती है, ई सार नै जाण'र म्हारै सगळा कामां सूं थारोइ परचार करसूं, कै थारै परताप सूं इ म्हारा सगळा कारज सरै।

•

पांच

[मुमि एकटू बैसन बसनो दियो काछे]

म्हनै पलक एक लिण थारै कनै बैठण-मातर री चाव पूरी करण दे।

म्हारै हाल-मांयला काम तो हूं पछै निवेड़ लेसूं।

थारो मुखड़ो जोयां बिनां, म्हारै जीव नैं जक पड़ै नंई। म्हारै काम-धन्धां रो तो छे'ई आवै नंई। पर ईंयां अणपार भवसागर में हूं गोता खावतो'ई जावूं।

वसंत री रुत, आज आपरी सांसां-निसांसां लेवती म्हारै गोखड़ै मायं आयी है, पर मळस भंवरा हरियै कुंजां रा मांयलां में गूंजता-गुण-गुणावता फिरै है।

आज म्हारै मन में आवै, कै थारै सनमुख बैठ'र ई निरवाळी वेळा में म्हारी जिंदगाणी रै निवदणरा रा गीत गावूं।

•

छव

[छिन्न करे लमो हे मोरे]

ई नान्हे पुसब नै तोड़'र ले लै, भबै ढील मत कर ! मनैं भो है, कठैइ भो कुमळा'र घूळ में नंइ पड़ जावै !

थारी माळा में ई फूल नै ठोड़ मिलै नंइ मिलै थारे हात रे झटकै सूं ईरो मान तो बधाव। तोड़ लै तोड़ लै, मब ढील मत कर !

कठैइ दिन नंइ भांप जावै, अंधारो नंइ हुय जावै, पर भणजाण्याई थारी पूजा'री वेळा नंइ टळ जावै !

जका कंइ रंगत अर सौरभ इणमें बापरी है, बसत रेवते ईनै थारी सेवा में सामळ करलै।

तोड़ लै, तोड़ लै, भबै ढील मत कर !

●

आठ

[राजार मतो बेशे, तुमि साजाबो जे शिशुरे]

राजकंवार रैं भेस में जकै टाबर नै तूं सिणगारैं, अर जकै नै मिण-रतनां रा हार पैरावैं उण टाबर रैं रमण री सगळी मजोइ जावैं परी, अर वीनैं गाभा-गैणा पग-पग माथैं भारी लागण लागै, कै कठेइ इणमें धूळ रा दागा नंइ लाग जावै ।

वो अपणे-आपनैं सगळा सूं अळगो राखे, अर हालते-डोलते ईं वीनै ओइ डर रैवैं ।

राजकंवार रैं भेस में जकै टावर नै तू सिणगारैं, अर मिण-रतनां रा हार जकै नै पैरावै ।

हे मां ! कंइ हुवै इण भेस में सजायां, अर मिण-रतनां रा हार पैरायां ? जे तूं घड़ीक आडी खुल्लो छोड़ दै तो ओ झट भाग'र मारग माथै जावै, जठै धूळ'रकादो, लू'र तावड़ो है—जठै लोकां रो मेळो' सोक लाग्यो रैवै अर दिन-भर भांत-भांत रा खेल हुंवता रैवैं, चारां-कानी जठै हजारूं सुरां में नौवत-बाजा वाजैं । बठै, यारैं ईं टावर नै कंइ इधकार मिलै नंइ ।

राजकंवार रैं भेस में जकै टाबर नै तूं सिणगारैं, अर मिण-रतनां रा हार जकै नै पैरावै ।

•

दस

[जेथाय थाके सबार अधम]

जठै सगळां सूं नीचा अर दीन सूं दीन बसै, उण ठौड़ थारा चरण विराजै—सगळां सूं लारै रैयोड़ां, नीचां अर सरवस-होणां रै मांय !

जद हूं तनै नमस्कार करूं, तो म्हारा नमस्कार कठैइ जार थम जावै, कारण थारा चरण अपमान रै तळै पड़्या है—जठै म्हारा ए नमस्कार निव सकै नंइ—वां सगळां सूं लारै रैयोड़ां, नीचां अर सरवस-होणां रै मांय !

अहंकार तो उण ठौड़ फटक इ सकै नंइ, जठै तूं दीन-दळदरी भेस में अडोळो फिरतो रैवै—वां सगळां सूं लारै रैयोड़ां, नीचां अर सरवस-होणां रै मांय !

जठै धन'र मान भरया है, उण ठौड़ हूं थारै सूं मिलण रो आस करूं। पण तूं तो संग-बीछड़्या रै सागै वांनै सावस देवतो फिरै—जठै म्हारो हिरदै निव सकै नंइ—वां सगळां सूं लारै रैयोड़ां, नीचां अर सरवस-होणां रै मांय !
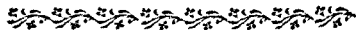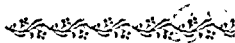
•

मुगती ? अरे आ मुगती कठैक मिलसी ? है कठै
मुगती ! आपणी प्रभुई जद सिस्टी रै बंधणां में,
सगळां रै सारै बंधग्यो है ।

छोड रे थारो ध्यान ! फैंक रै थारी फूलां री
छाब नै ! फाटण दै गाभां नै, अर लागण दै कादो
अर माटी !

करम जोग में उणरै सागै एकोकार हुयजा अर
झरण दै थारो पसेवो !
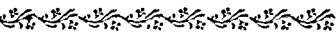
●
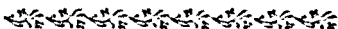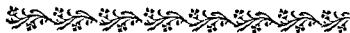
दूजां रा आडा संभाळतौ पंथी जियां अंत-पंत आपरै घरै आय पूगै वियांई भुवण-भुवण में भटकतौ जीव आखर आपरै अंतर में विराजता ठाकुरजी नै पावै ।

म्हारा नैण कित्ताई मारग जोंवता, दिस-दिस में फिरता रैया—पण जद मैं बानै मींच्या तौ मन बोल्यौ, 'तूं अठै है ।'

इण जगतरी लाखूं धारावां में झरतौ जळ, 'हूं, अठै' कैंवतौ वैवै । अर 'तूं कठै तूं कठै' कस्कर झुकतै नैणां सूं आंसूड़ां री झड़्यां लागती इ जावै ।

चवदै

[आमि बहुवासनाय प्राणपणे चाई]

हूं आं घणी वासनावां नै प्राण-पण सूं भोगणा चावूं, पण तूं मनै आंसूं अलगो राख'र हरदम बचावै। थारी आ कठोर किरपा म्हारै जीवण में भरी-पूरी रैवै।

म्हारै बिन मांग्यां इ तूं मनै चानणो, अकास, तन-मन अर प्राण जिसा अमोलख दान देवै। नित-नित मनै तूं इतै महादान रै जोगो बणाया जावै, अर इयां म्हारी इंछावां रै, संकट सूं मनै बचायां जावै।

कदेई तो हूं भूल-भटक जावूं, अर कदेई थारै मारग रो ध्यान धर'र चालण लागूं। पण तूं निरदई म्हारै सामो आ'र ओभळ हुय जावै।

●

म्हारै मायं जीव में दया विचार'र, थारी किरपा सूं करै, जे तूं बीनै पाछो लेवणी चावै, तो ले सकै है। म्हारै जीवण मैं तूं ईंयां पूरण करावै, अर म्हारै मन नै थारै सूं मिलण रै जोगो करै। पर ईंयां दशावां रै घोर संकटां सूं मनै बचायो जावै।

•

पंदरै

[आमिहेथाय थाकि शुधु]

हूं तो अठै फकत थारा गीत गावण नै ई आयो। थारी ई जगत री सभा में मनै ई थोड़ी ठोड़ दिये !
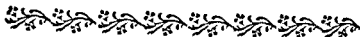
हे नाथ थारै इं भुवण में हूं किणी धंधे में लाग्यो नंइ; म्हारै निकामै रा प्राण तो कोरा सुरां रै सागै गूंजताई रैवै !

रात रा सूनै मिंदर में जद थारी पूजारी वेळा हुवै, हे राजन ! मनै गावण रो हुकम दिये !

परभातै, जद अकास में थारी सोनळ वीणा रा सुर बाजण लागै, हूं अलघो पड़्यो इ नंइ रै जावूं-इत्तो मान तो मनै अगसे !

●

सोळै

[जगते आनन्द यज्ञे आमार निमंत्रण]

जगत रै आणंद-जिग रो नूं तो पा'र म्हारो मिनख-जमारो धिन-धिन हुयो।

म्हारा नैण रूप री नगरी में घूम-घूम'र आपरी साध पूरी करण लाग्या, अर म्हारा कान गैर-गंभीर सुरां में मगन हुयग्या।

थारै ईं जिग में बंसरी बजावण रो काम तैं मनै सूंप्यो। म्हारै गीत-गीतरै मांय हूं म्हारै हरख-सोग नै गूंथ-गूंथ'र गायां गयो।

कांई वा वेळा हुयगी, जद हूं सभा रै मांय जा'र थारो सरूप निरखूं? म्हारी आ बीनती है के थारी जै-जैकार सुण'र ई जावूं।

●

सतरै

[प्रेमेर हाते धरा देब ताई रयेछि बसे]

प्रेम रै हातां मरपण हुवूं इं तांई मठै बैठो हूं। देर घणीज हुयगी, मर ईयां घणाई दोसां रो भागी हूं हुयो।

वै विध-विधांण रै बंधणां री डोर सूं मनै बांधण नै मावै। जद हूं थांसूं टाळो करुं। इण रो जको ढंड तू मनैं देसी, वो राजी मन सूं सैन करसूं।

प्रेम रै हातां मरपण हुवूं, इं तांई मठै बैठो हूं। लोग मनैं दोस लगावैं, वै कूड़ा नंइ। वीं सगळी भूंड नै भोडयां हूं सगळां रै पगां में पड़यो रैसूं।

बखत वीतो, दिन ढळयो, बजार में सगळा बिकरी बट्टा पूरा हुया। मनैं बुलावणिया, रीसावणा हुय-हुय पाछा फिरया। प्रेम रै हातां मरपण हुवूं,

इं तांई मठै बैठो हूं।

•

अठारै

[मेघेर परे मेघ जमे छे]

वादळ माथै वादळ मंडं, ग्रंधारो घिर्‌यां जावै-मनै एकलै नै थारै दुवारै क्यूं बैठा राख्यो है ?

धंधै रा दिनां हूं घणां लोगां रै सागै काम-काज में फस्यो रैवूं, पण ग्राज ई वादळवाई रै दिन तो हूं थारी ग्रास लगायां ई बैठो हूं।

मनै एकलै नै थारै दुवारै क्यूं बैठा राख्यो है ?

जे तूं थारो मुखड़ो नंइ देखावै, ग्रर मनै दुतकारै तो ग्रा वादळवाई री वेळा फेर किंयां कटसी ?

हूं तो ग्रळघो निजर टिकायां जोवूं; ईंयां जोयां ई जावूं, ग्रर म्हारा प्राण ग्रणथमी पून रै झकोरां सागै कूकता रैवै।

मनै एकलै नै थारै दुवारै क्यूं बैठा राख्यो है।
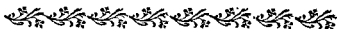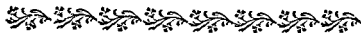
●

उगणीस

[ओगो मौन, ना जदि कथो]

है मूनधारी ! जे तूं नंइ बोले, तो मत बोल ।
हूं थारी सून नै हिवड़ै में धारयां संवतो जासूं ।

तारां-जड़्यै अंबर नीचै, ज्यूं रात नीची धुण-घाल्यां, पलकां-थाम्यां पड़ी रैवै, उण भांत हूं, धीजो-धार्‌यां बोलो-बालो पड़्यो रैसूं ।

थासी, थासी, परभात थासी ! अंधारो कट जासी ! अर थारी वाणी, सोनळ धारावां में आभै नै फाड़'र गूंजसी ।

वीं वेळा म्हारै पंखीड़ां रा माळा मांय सूं पांखांरी फड़फड़ाट में थाराई गीत जागसी । अर थारो सुरीलो तान सूं म्हारै वन री बेलड़्यां फूलसी-फळसी ।

बीस
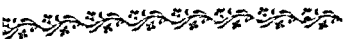
[जे दिन फूटल कमल]

जके दिन कंवळ विगस्यो, मनै कंइ ठा पड़ी नइं।
म्हारो मन तो कठैई भटकतो इ रैयो।
म्हारी फूलां री छाब तो रीती इ रैयी, अर पुसब कठैइ लुकयोड़ो इ रैयग्यो।

रैरै'र म्हारो जीव आकळ-व्याकळ हुंवतो अर हूं सपनै में उचक-उचक पड़तो। हाय ! कठैइ जद मंद-मधुर सौरम दिखणादै वायरै में आंवती !

अरे ! आ ई सुगन म्हारै हिवड़ै में कस-मसकरतो ओळूं री चिलको-सो'क नाखै। मनै उण वेळा ईयां लागै जाणे वसंत रो बायरो भुवण-भुवण में भटकतो, कामना री निसांसां छोडै।

कुण जाणै, आ इत्ती अळगी कोनी ही, अरे ! आ तो म्हारी आपरी ई सांस ही ! हाय रे! आ सौरम, जका म्हारै हिवड़ै रै बाग मांय सूं फूटी ही !

●
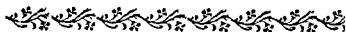
इक्कीस

[एवार भासिये दिते हबे आमार एइ तरी]

अबै तो ईयां लागै कै म्हारी आ नाव जळ मैं उतारणीई पड़सी । नदी रै तीर बैठयां इ वेळा बीत्यां जावै ।

हायरे म्हारा आळस ! वसंत फुलड़ा विगसा'र, आपरो काम निवेड़'र पूठो बोर हुयग्यो । बोलो, आं खिर्योड़ा फूलां नै हातां मैं लियां हूं कंइ करूं ?

जळ छळ-छळाट करै, लैरां माथै लैरां उठै, अर ईं सूनै वन मैं रुंखां रै तळै पानड़ा खिर-खिर पड़ै ।

ईं सूनै मन सूं तूं कींनै जोयां जावै ? अकास अर वायरो, सगळा इ तो नदी रै पार सूं गूंजती वंसरी रा सुरां सूं धरहरै !

●

बाईस

[आजि श्रावण-घन-गहन-मोहे]
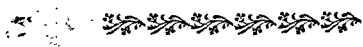
आज सावणियै रै लोरां री गैर-घुमेर, छायां में धीमा-मधरा पगल्या धरतो, तूं रातड़ली ज्यूं सांत, सगळां री दीठ बचायां कियां घूमै ?

आज परभात नैण मूंद लिया, अर परवाई विरथा ई हेला पाड़यां जावै । देख ! उघाड़ै नीलै आभै ने बादळां ढक नाख्यो है ।

वन-मोम में सून गरणावै । सगळा घरां रा माडा दियोड़ा है । ईं सूनै मारगियै में एकलो पंथी तूं कुण है ?

हे म्हारा एकज बेलो ! हे म्हारा प्रीतम ! म्हारै घर रो दुवारो खुल्लो है । म्हारै घर रै सामो आ'र सपनै दइ मनै विलमा'र मत जावै ।

●

तेईस
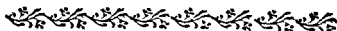
[आजि झड़ेर राते तोमार अभिसार]

हे म्हारा प्राणसखा ! आज री ई तोफानी रात रा तूं किणी प्रेम री मुसाफरी में निसरयो है कंइ ? अकास आज हतास हुयोड़ो कूकै, अर म्हारै नैणां नैं नींद नंइ।

हूं बारणौ खोल-खोल'र बारै जोवूं। पण हे म्हारै जिवड़ै रा साथी ! बारै मनै कंइ दीसै नंइ। थारो मारग कठीनै-कर है ?

किसी अळघी नदी रै पार सूं किसै घोर वन री कांकड़ उलांघ'र, किसै डरपावणै अंधारै नै पार कर'र तूं आवै ? हे म्हारै जिवड़ै रा साथी !

●

चौईस
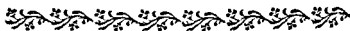
[दिवस जदि सांग हल]

जे दिन आंथ जावै, जे पंखेरू फेर नंइ गावै, जे पून थक-परी थम जावै, वीं वेळा तूं मनैं घणघोर वादळां रै तळै, गैरै अंधारै री ओट में ले लिये, ज्यूं छांनै-मानै सपनां में तूं धरती नै नींद रो पछेवड़ो ओढाय जावै। अर सिझ्या पड़ी रा कुमळांवतां कंवळां री उणींदी आंखड़ल्यां नै तूं मूंदावै।

जकै पंथीड़ै रै गेलै रो खरचो, मारग में इ खूट जावै, जकै नै घाटो सामीई दीसै, जकै रा गाभा जीराजोर हुय, धूळ में भरीज जावै। जकै रै डील रो सो सत ई नीसर जावै, उणरी विपदा-हाण नैं थारी करणा री वादळी री गैरी छायां सूं ढक नाखे।

उण नैं लाज सूं मुगत कर नाखे, अर थारी मेर-भरी रात रै आमोरस सूं वींनैं नूंवो जीवण बगसाये।

●

पचीस

[माझे माझे कभु जबे]

बिच-बिच में जद-कदेइ दुख आ'र म्हारै अंतर रै परकास रो गास कर लेवै अर जद धीरै-धीरै थकाण मंद पगां सूं आ'र थारै पूजा रा फूलां नै कुमळाय नाखै-वीं वेळा मनै कंई भी नंइ व्यापै, कारण थारी आसा री अटळ जोत नित जागती जावै।

वीं थाकेलै री रात रा हूं निरभै हू'र, म्हारो सरब अंतर-मन थारै अरपण कर परो, म्हारै प्राण-पण सूं सगती धारण कर'र मारग री नींद नै तेड़सूं।

उदास मन सूं थारी पूजा रो पोचो ऊछब नंइ मनावूं। अणमणें अर खीण कंठां सूं थारी पुकार करूं नंइ।

तूं रात री आंख्यां में दिन ला देवै, जिण सूं औ परभाते नुंवै चानणै नै लियां फेर जागै।

●

छाड़ंस

[से जे पासे एसे बसे दिल]

बो म्हारै पसवाड़ै आ'र बैठ्यो, पण हूं जागी नइ !

हाय ! मनै हतभागण नै, आ किसीक गैरी नींद आयगी ही !

सूनी रात रा बो हात में बीणा लियां आयो अर म्हारै सपनां में आपरी गैर-गंभीर रागणी बजायग्यो।

जाग'र जोवूं तो दिखणादो पून मस्तो में गैळीजगी है, अर आपरो सोरम सूं अंधारै में सगळै व्यापगो।

म्हारी रात इंयां कियां ढळ्यां जावै ? मनै कुण मिलसी, कुण नंइ मिलसी ? इत्ती नैड़ो आयां पछैइ उणरै नैड़ो हूं पुग सकूं नंइ ! बीरै गळै री माळा म्हारै हिवड़ै रो परस क्यूं नंइ करै ?

•

सत्ताईस

[कोथाय आलो कोयाम ओरे आलो]
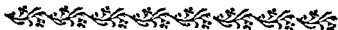
चानणो ! कठै है रे चानणो ? बिरै री अगन सूं जगावो रे ईनै जगावो ।

दिवलो तो है पण ज्योत नंइ ! कंइ म्हारै भाग में ओइ लेख है ? इणसूं तो मरणो ई चोखो । बिरै री अगन रै दीयै सूं ईनै जोवो रे जोवो !

वेदना-दूती गावै है, 'अरे जिवड़ा ! थारै तांई भगवान जागै । आधी-रात रै घोर-अंधारै में बो प्रेम री रंगरळी सारू तनै बुलावै । दुख दे'र थारो मान राखै अर थारै खातर ई भगवान जागै ।'

गिगन में बादळ मंडाण करै, अर बिरखा रो पाणी अणथमो झड़्यां लगावै । इण घोर-अंधारी रात में म्हारो जीव किण रै तांई बिलखै ? ईंयां बो क्यूं कुरळावै ?

खिण-खिण में बीजळी रो भळको नैणां सामो आ'र घोर-अंधारो कर नाखै ।
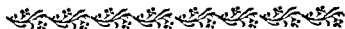
कंई ठा, किसोक मळयो गंभीर सुरां में गावणो-बजावणो हुवै। म्हारा प्राण मनै बी मारग-घाती ले जावणा चावै। पर म्हारी घांस्यां घागै घोर-घंधारो हुयो जावै।

चानणो! कठै है रे चानणो? विरै री अगन में जगावो रे ईं नै जगावो!

वादळ गाजै, पर बायरो सरणावै। बगत बीत्यां, फेर आवणो बर्णै मंद। रात काळी-स्याम विरदां चावै। प्राणां री बळो दे'र प्रेम रो दिवळो सजोवो!

●

अठाईस
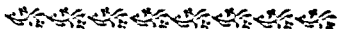
[पड़ाय आछे राशा, छड़ाय येते चाई]

मो-माया रै बंधण में बंध्योड़ो हूं। आनै छोड़तां म्हारो काळजो कळपै। मुगती चावतो हूं थारे कनै जावूं, पण मांगती बखत लाजां मर जावूं।

हूं नेंचै जाणूं के तूं म्हारै जीवण रो अमोलख धन है, अर थारै जिसो धन मनै फेर मिलै नंई।

तोई म्हारे घर में भरयो अटाळो बारे फेंक पावूं नंई।

थारी माया रै ईं पड़दै सूं म्हारो हिवड़ो ढक्योड़ो है, जकै रै तार-तार में मौत गूंथ्योड़ी है—जे हूं म्हारै चित-मन सूं इणरी मूग करूं, तोई औ मनै थाछो लागै।

मैं कितांई रिण करया, कितो ई बार हारयो, कितांई लाज रा ढाका ढकूं। पण, जद कदेई हूं म्हारै भलै री अरज करूं, म्हारै मन में औ ई भौ समावै कै कठैई तूं मनै आं बंधणां सूं मुगत नंई कर नाखै!

●

गुणतीस

[आमार नामटा दिये ढेके राखि जारे]
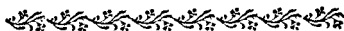
जिकै नै म्हारै नांव री ओट में ढक्योड़ो राखूं,
बो म्हारो ई नांव री कैद में पड़्यो रोवे।

रात दिन सगळी बातां भूल्यां, हूं म्हारी नांव री
भींत नै अकास पाखी ऊंची उठावण में इ लाग्यो
रैवूं।

पण ई नांव री भींत रै अंधारै रै मांय म्हारो
सांचलो सरूप बीसरतो जावूं।

गारै माथै गारो लीपतो हूं ई नांव री भींत नै
ऊंची उठावतो जावूं, जिणसूं म्हारो नांव घणो
मोटो हुयो चावूं पण ईंरो गरब करूं। कठैई ई
भींत मे छेद नइ रै जावै।

हूं जित्ता जतन करूं, वै सगळा बिरथा है—कारण
इण सूं हूं म्हारै सांचलै सरूप नै बीसर जावूं।

●

तीस

[एकला आमि बाहिर हलेम]

●

हूं थारै सागै रास करण नै एकलो ई थारै नीसरग्यो, पण ईं सूनै अंधारै में ओ म्हारै सागै-सागै कुण चाल्यो जावै ?

घणो मटकळो लगा'र इण सूं गैल छुडावणो चावूं। कठैई एकै पासी हुय'र चालूं, लुक जावूं अर मन में जाणूं कै बलाय टळगी, पण तोई ओ आवतो दीसै।

आपरी ईं अकपळाई सूं ओ धरती नै धूजावतो हालै। सगळी बातां रै मांय आपरी ई कथा छेड़ै। हे प्रभु ! ओ म्हारो 'हूं' भाव घणो नीलज्जो है, इण नै सागै लियां हूं सरमां-मरतो थारै बारणै किंयां आवूं ?

●

इकतीस

[बन्दी, सोरे के बँधे छे एत कठिन करे]

'कैदी ! बता, बो कुण हो, जके तनै इत्तो काठो बांध्यो है ?

म्हारै मालक ई मनै, ईं लौंठी सांकळ सूं बांध्यो। मन में आ जाएं'र कै धन रै बळ में म्हारै सूं बड़ो कोई नंइ हुवै, हूं राजा रै धन नै म्हारै घर में भरण लाग्यो। जद मनै नींद आवण लागी, हूं म्हारै मालक री सेज माथै सोयग्यो, जाग'र जोवूं, के म्हारै ईं भण्डार में हूं बंध्योड़ो पड़्यो हूं। कैदी ! बता बो कुण हो जके ईं सौंठी सांकळ नै घड़ी ?

आपो-आप घणाई जतन कर'र ईं सांकळ नै मैं घड़ी।

मन में सोंतूं कै म्हारै पुरसातण सूं सगळे जगत नै डिकार जासूं, हूं ई एकलो सुतंतर रेसूं सेस सगळा म्हारा दास हुय जासी।'
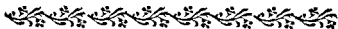
'इण खातर, हूं रात-दिन लोव रै कारखानै में खट्यो कित्ताई भट्टयां री अगन में तपा-तपा'र हथोड़ां री चोट मारी, जिणरो कोई ठिकाणो ई नंइ ।

'जद घड़ाई पूरी हुई अर सगळो कड़्यां वजर ज्यूं करड़ो हुयगो, तो जाणू के म्हारी ई सांकळ मनै ई कैद कर नाख्यो ।'

बत्तीस
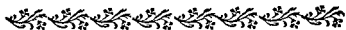
[संसारते भार-जाहारा भालोवासे]

संसार में जका म्हारो भलो चींतणियां है, बे मनैं कठण बंधणां री डोर सूं बांध्योड़ो राखैं ।

थारो हेत तो सगळां सूं घणो है, जिण सूं थारी रीत ई न्यारी हुवै । तूं मनैं बांधै नंइ पण म्हारै सूं लुक्योड़ो रैवै, घर ई दास नैं खुल्लो राखै ।

बै सगळा आ जाण'र, कै हूं बांनैं भूल नंइ जावूं, मनैं एकलो छोड़ै नंइ ।

तणै हूं हेलो पाड़ूं चावै नंइ पाड़ूं म्हारी मरजी हुवै ज्यूं करूं—पण, थारी खुसी ई तो म्हारी खुसी री आस में बाट जोंवती ई रैवै ।

•

तेतीस

[तारा दिनेर बेला एसे छिल]
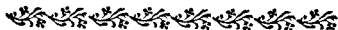
दिन री वखत वै म्हारै घरे आया—अर बोल्या
'एकै पासी, म्हांनै ई पड़्या रेवण दो ।'

वै बोल्या, 'ठाकुरजी री सेवा में म्हे थनै सायरो
देवां—पूजा हुयां पछै परसाद मांय सूं थोड़ो म्हे'ई
ले लेसां ।'

इण भांत वै दळदरी मोण-मलीन भेस करयां,
म्हारै घर रै एक खूणै में आ'र पड़ग्या ।

रात रा अंधेरै देखूं कै वै मातागी म्हारै मिंदर में
बड़ग्या, अर आपरै गूगला हाथां सूं म्हारी पूजा
री भेंट-सामगरी चोर'र ले जावण लाग्या ।

●

चौतीस

[तोमाय आमाय प्रभु करे राखि]

म्हारै में इत्तोइ 'हूं' पणो बाकी रैवै कै हूं तनै म्हारो मालक बणायां राखूं ।

सगळी दिसावां में हूं थारा इ दरसण करूं, सगळा पदारथ थारै मांय समायोड़ा देखूं, पर हे म्हारा प्रीतम ! दिन रात म्हारो प्रेम थारै इ अरपण करतो रैवूं । म्हारै जीवण में भाई इच्छा बाकी रैवे–कै हूं तनै म्हारो मालक बणायां राखूं ।

म्हारै में कोरो में इत्तोई अहम बाकी रैवै–कै हूं तनै कठेइ ढक'र राखूं नंइ । थारी लीला सूं इ म्हारा प्राण भरया रैवै अर आण'र ई हूं संसार मे प्राणां नै धारूं ।

थारी गळबाथ रै मांय ई हूं बन्ध्योड़ो रैवूं, पर म्हारै बंधणो में कोरो इत्तोई अहम बाकी रैवे–कै हूं तनै म्हारो मालक बणाया राखूं ।

म्हारै जीवण में थारी मरजो पूरी हुवै–पर बो थारी प्रेम-डोर रो बंधण ई तो है !

पैंतीस

[चित्त जेथा भयशून्य, उच्च जेथा शिर]

जठै चित्त में भौ नंई व्यापै, अर सीस सदा ऊंचौ रेवै। जठै घर री भींतां आपरै आंगणा में, रात-दिन धरती नै खण्ड-विखण्ड कर-कर छोटी अर सांकड़ी नंई बणावै। जठै वाणी हिरदै-मांयलै सांच रै झरणै मांय सूं फूट'र नीसरै।

जठै करम री झड़-धारा, देस-देस अर दिस-दिस में हजारूं धारावां में अणथमी बगती रेवै।

जठै थोथी रीतां रै वेळू रा टीबां में तरक अर विचार रौ झरणौ सूकै नंई।

जठै तूं नित-नित सरब करम, चिन्ता अर आणंद रौ नेता है—हे म्हारा बावस! थारै फेलावणी रा निरदई धूंकड़ा सूं ई भारत देस नै जगा'र साचो सुरग बणाव!

●

छत्तीस

[तव काछे एह मोर शेष निवेदन]
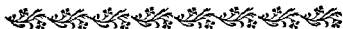
थारे सूं म्हारी आई सेस बीनती है—म्हारै अंतस री सबळ खीणता री काई नै थारै पराक्रम सूं काट नाख !

हे प्रभु ! म्हारै घट-घट रै मांय इसी सगती भर दे, कै सुख अर दुख नै संन कर सकूं। इसौ बळ दे कै आंनै सान्त मुळकतै मुखड़े सूं सदा टाळतो ई जावूं।

थारी भगती री इसी सगती दे, कै म्हारा सगळा काम समान फळ-देवण-हाळा हुवै, जिणसूं हेत-सनेव अर पुन्न री दिवलो दीपै।

इसी सगती दे कै किणी गरीब नै कदेइ ओछो अर हीण जाणूं नइ, अर किणी बळवान रै चरणां में लूटूं नंइ।

इसौ बळ दे, कै म्हारै चित्त-मन नै एकोकार कर'र ओछापणै रा भावां नै त्यागूं, अर म्हारै मन नै सदा ऊंचो उठावूं।

इसी सगती दे कै थारै चरणां में माथौ टेक्यां म्हारे चित री विरत्यां नै रात-दिन थिर राख सकूं।

●

सेंतीस
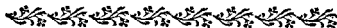
[भेवे छिनु मने जा हवार तारि शेपे]

जिण बखत में जाण्यो कै जको हुवणो हो पूरो हुयग्यो, म्हारी जातरा बठैइ जा'र थमगी !

ना तो मारग इ जाणूं, ना कोई धन्धो ई ! मारग रो तो सो खरचो ई खूटग्यो श्राज ! श्रबे तो बा बखत श्रायगी है, कै ईं जर-जर काया नै दीन-मलीन भेस में लियां, किणी रंज-रोई में जा'र श्रासरो लेवूं !

पण, श्रो कंइ जोवूं ! श्ररे श्रा कंइ श्रणंत लीला हुवे, श्रा कंइ नुवीं-नुवीं हकीगत मांय री मांय व्यापै !

जद जूना बोल मुखड़ै सूं नंइ नीसरै, म्हारै हिवड़ै मांय सूं नुंवा-नुंवा गीतड़ा गूंजण लागै—अर जूनो मारग जठै खतम हुवै, तू मनै नुंवां-नुंवां देसा में लेजायां जावै !

•
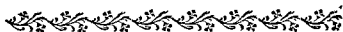
अड़तीस

[चाइ गो आमि तोमारे चाइ]

हूं चावूं, तनैं चावूं, तनैई हूं चावूं—म्हारो मन
सदा आइ बात गुणती रेवै ।

रात-दिन जकी वासनावां रैं चक्कर में डोलतो
फिरूं, बै मिथ्या है, सगळो मिथ्या, पण हूं तो तनै
ई चावूं ।

जियां रात आपरैं अंतस में चानणैं री वीनती नै
लुकायो राखो बियांई घोर मो'माया रैं मांय
डूब्योड़ो हूं तो तनैंई चावूं ।

जियां आंधी सांती ने भंग कर नाखै, तोई वा
आपरै जीव में सांती चावै—बियांई थारो जीव
दुखांवतो हूं तनै ई चावूं ।

●

चाळीस
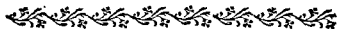
[दीर्घकाल मनावृष्टि, प्रति दीर्घकाल]

हे इन्दर देवता ! म्हारं हिरदै-देस में घोर काळ पड़घो है—बरसां सूं बादळी रा तो दरसण ई नंइ ?

आभो डरपावणो लागं, सूनो डेर गरणावै, कस री तो कोइ खूणं-खचूणं में चूं खलो ई दीसे नंइ। कुणी छांट-छिड़के रो समंचार लावे नंइ।

हे देव ! जे थारी आइ मरजी हुवे तो भेज दे थारी पिरळे-मुखी काळी-पीळी आंधी ने गैरी गाज सागे !

म्हारे ईं आभै रे दिगदिगंत नै बीजळी रा कोरड़ा री मार मार पळ-पळ में बीरी बांकी चमचमाट सूं म्हारे अंतर में अचूंभो भर दे !
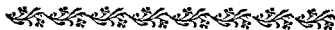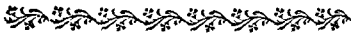
हरलै, हरलै हे प्रभु! थारी ईं घोर तीखोड़ी तपत नै, ईं अगन बरसांवती मून भळां नै, अर ईं अण-सैइजती निरासा री बळत नै !

मेर करो म्हारा मालक मेर करो ! जियां बापू री रीस रै दिन मावड़ी रा सजळ नैण टावर माथै मेर करै; बियांइ थारी करुणा री बादळी सूं म्हारी सगळी विपदा हर लै !

इकतालीस

[कोयां छायार कीने दोड़िये
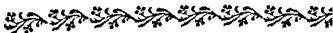
किण छाया में किण नें उडीकतो, तू' सगळां सू लारै लुकयोड़ो क्यूं उभो है ?

तनें धूल-धकोल करता थारी चिनीघणी परवा कर्‌यां विनां बै तनें मारग में लारै छोड़'र मागै निसरग्या।

हूं थारै खातर, फूलां री छाब सजायां, सूनी घड्यां में, विरछां रै तळै बैठी उडीकूं। आवै जकी ई एक-दो फूल उठा'र लियां जावै अर ईयां म्हारी छाबड़ी रीती हुयां जावै।

परभात गमी, दोपारो वीत्यो अर सिंझ्या री वेळा हुयां जावै, अर म्हारी आंखड़ल्यां उणींदी हुयां जावै।

घरे जांवता सगळा इ मने जोय-जोय हंसे भर' है लाजां मर जावूं। मुखड़े माथे गूंवटो काढयां, हूं मंगती हुवे ज्यूं बैठी रेवूं, जद कोई म्हार बूझे के तने कंइ चइजे ? हूं दोनूं नेणां ने नीचा नाख्यां ग्रणबोली इ रे जावूं।

ग्ररे ! हूं किसे मूंढ़े लाजां मरतो कंवूं, कै मने केवळ तूं इ चइजै–हूं बोलूं पण कियां ?

रात-दिन फकत थारो मारग जोवती हूं अठे थारे खातर बैठी हूं। हूं म्हारी दीनता ने घणा जतनां सूं थारे राजसी ठाठ आगै उण दिन ग्ररपण करसूं–हाय ! हूं निरभागण म्हारे इं ग्रभमान ने हियड़े में लुकोयां इं बैठी हूं।

●

तिणखली माथे बैठी-बैठी हूं पळपे, माभं पासी जोंवती जावूं अर म्हारै मन में थारै मावण री सोनळ सपना लियां जावूं, कै जद तूं अठै आ'र मनै मिलै अर सरवाले पावणो ध्यावे। इणी में थारै रथ मार्थ सोनळ धजा भळमळ फरकती दीसे, अर सागै-सागै बंसरी री तान ई गूंजती सुणीजे।

थारै परताब सूं धरती डगमग डोले, अर म्हारा ई प्राण नाचण लागे। वीं बेळा, मारग माथै ऊभा से लोग इचरज में जोवे, कै तूं म्हारै मारग माथै आवै, अर म्हारा धूळ में भर्‌या दोनूं हाथां नै झालण खातर तूं रथ सूं हेटो ऊतरे।

हूं म्हारै पड़ोळै, दीन-मलीन, मंगती रै भेस नै लियां थारै हाथं पसवाड़ै ऊभूं, अर वीं बेळा गरब पर सुख सूं कांपतो वेलड़ो ज्यूं मनै देख'र सगळो जगत अचूंभो करै। थारै वखत बीत्यां जावे, पण म्हारा कानां में थारै रथ री घरघराट इ सुणीजै नंइ।

थारै इं मारग सूं कित्ताई जणा साज सूं निसरया, अर कित्तीई रणक-झणक हुई। पण कंई हूं एकलो इं दशा रै मांय बोलो-बालो-सगळां सूं न्यारो ऊभो इ रैगो? अर कठै हूं मंगती री साज लियां नैणां सूं जळ टळकावती इ रै जासूं? कंइ तूं मनै इं मलीन भेस में ई राखसी?

•

बयांलीस

[कदा दिन एक तरीजै]

म्हारो तो अद एक बात विचारी, कै एक डूंगी में केवळ तूं अर हूं बैठ'र बिन-कारण ई बैवता जाता। तीनूं भुवना में आ कोई जाण सकै नंई, कै म्हां दोनूं तीरथ-जातरी किसै देस सूं बीर हु'र किसै देस नै जावां।

वीं अणपार समदर रै बीच में, हूं एकलो थारै इ गानां में गीतां रो रस पाळगूं जदी जळ री लैरां दंई, भासा रा सगळा बंधणां सूं मुगत हुयी-थर म्हारो वीं बंधण-मुगत रागणी नै तूं मुळक-मुळक'र सुणती जासी।

कांई हाल बा वखत आई नंई? कांई हाल घणा बाकी ई रैगया?

अरे जोवो, समदर रे तीरं सिझया ऊतरे अर धूंधळे चानणे में समदर-पार हाळा पंछीड़ा उड-उड'र आपरे आळां में सगळा पाछा पूगे ।

कुण जाणै, तूं घाट माथे कद आसो, अर म्हारा बंधण कद काटसी ? म्हारी आ डूंगी, आंथतै सूरज री सेस किरण्यां दंइ, आधी रात रे घोर-अंधारे में आपरी अणदीठ जातरा माथै दुर जासी ।

चमालीस

[आगार ऐई पथ चाया तेई आनन्द]

मनै ईं मारग माथै वाट जोवण में ईं आणंद मिलै। जठै तावड़ौ छायां रै सागै रम्मं अर बिरखा लारै बसंत रुत आयां जावै।

ईं केइ रै आगै सूं आभै रा हलकारा खबर लावै लेजावै, अर म्हारै मन नै मगन करती पून मधरी-मधरी बैंवतो जावै।

सारै दिन नैण बिछायां म्हारै दुवारै हूं एकलो ई बैठो रेवूं, पण मन गे विसवास है कै वा सुभ घड़ी नैचै आसी जद हू वीनै पिरतक देखसूं।

वीं वेळा तांई हूं एकलो पल-पल में म्हारै मन-मन में हंसतो-गावतो रेवूं-जद वायरो आपरी सौरम सूं दिस-दिस में व्याप जासी।

●

पैंतालीस

[तारो सुनिसनि कि 'तार पायेर ध्वनि]

कांई तैं उणरै पगल्यां री चांप सुणी नंई—वो, आवै, आवै, आवै। जुग-जुग, पल-पल, रात-दिन वो आवै, आवै, आवै !

हूं म्हारै मन रै मतै, गैलै दंई जका गीत गावूं वांरा सगळा सुरां में वीरी अगवाणी री राग वाज्यां आवै—वो आवै, आवै, आवै !

कदेइ फागण रा भीना-भीना दिनां में वन रै मारग सूं वो आवै, आवै, आवै !

कदेई सावण री मे-अंधारी रातां में बादळां रै रथ में बैठ'र वो आवै, आवै, आवै !

दुख पछै घणै दुख में वोरा पगल्या म्हारै हिवड़ै में बाजण लागै। अर सुख जाणै, किसो वखत वो रै चरणां री पारस-मण रै कंवळै परस सूं वो मनै सुख देवै वो आवै, आवै, आवै, नित-नित आवै !

•

छयांळीस

[मामार मिलन लागि तुमि]

म्हारे सूं मिलण खातर कंइ जाणे तूं कद री बीर हुयोड़ो म्रायां जावे !

थारा चांद-सूरज तनें कठेक ढक'र राखे ?

कित्तीई बार सूरजगाळी म्रर सिंझ्या री वेळा में थारे चरणां री चांप वाजें, म्रर थारो दूत छानें-मानें म्हारे हिवड़े रें मांय थारो सनेसो ला'र देवें।

म्ररे पंथी ! म्राज म्हारे सरब प्राणां में हरख व्यापग्यो है, जिणसूं म्हारो हिवड़ो कंप-कंपे म्रर पुळकें।

वा वखत म्राज म्रायगी है जद म्हारो वाकी काम सगळो पूरो हुयो, है म्हाराजा ! पून थारी सोरम रो सनेसो ले'र जकी म्रायगी।
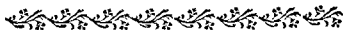
●

सैंतालीस

[पथ चेये तो काटल निशि]

रात तो बीरी मारग जोवता ई कटगी। मन में भोळै-दिनूगै री बगत, म्हारो हारथोड़ो थाक, कठैइ लाग नईं जावै। जे वी वेळा, पावणेचक वो म्हारै दुवारै आर ऊभग्यो तो?

धनरी छाया म्हारे घर माथै पड़ै, जद बीरे, पावणा री वेळा जाण्या। भरे भायां। बीरो मारग छोड़ दिया, बींनै भावतै नैं कोइ रोकया मत!

जे बीरै पगल्यां री धाप सूं म्हारी नींद नईं जागै तो थानैं म्हारी सौगन है, म्हारी नींद मत तोड़ज्या। चिड़कल्यां री चींचाट सूं, परभातै धानणै रै नुवै महोछव सूं, पछै बसंती वायरै री वाहळ-ब्याकळ करणहाळी सौरम सूं ई हूं जागणो चावूं नंई।

ये मनैं नींद लेवण दिया, चावै म्हारो मालक खुद ई म्हारै दुवारै ऊभो हुवै।

म्हारी नींद जका गैर-गंभीर, अचेतण, अर मणमोल है, वींरीं ई पंपोळ री उडीक में है, जद वो म्हार म्हारी मूंदयोड़ी पलकां नै उघाड़े। नींद रो खुमार जद टूटे, हूं बीरी दोनूं आंख्यां नै देखणी चावूं। म्हारै मुखड़ै माथै बीरी मुळकण मनै मंचूमै में दीसणी चाइजे। जद बो म्हारै सुख रा सपनां दंइ म्हारै सामो आ'र उभे।

म्हारै नेणां मागे सगळे चानणां सूं पैली, बोई मावणो चइजे, मर बीरे, इ सरूप रा दरसणां सूं परभाते पेलपोत हूं जागूं। बीरी पैली झांकी रे मांय बीरो मैर-भर्‌यो मुखड़ो जोयां ई मनै सुख मिलै। म्हारो चित बींरो चेतणा सूं भरी'जर कांपण लागसी। थां मांय सूं कोई मनै जगाया मत, मनै तो बो इ, मा'र जगासी।

•

अड़तालीस

[तरवन आकाश तने ढेऊ हुवे छे]

परभाते, प्रकाश रै हेटै पंखेरवां रै गीतां री लैरसीक उ ण लागी। मारग रै दोनां पासी फूलां आपरी हंसी बिखेर नाखी। बादळियां री कोरां सोनळ रंगां में राचगी—कुण'ई जोयो नइ। म्हे म्हांरै मन में मगन हुयोड़ो भाग्यां जावै हो।

म्हां, ना तो हरखाएा गीत गाया, पर ना रम्या फूदयाई। म्हां डावै जीवएं भूल'र इ जोयो नंइ, गांव में सौदो लेवए ई गया नंइ, पर ना हंस हंस बोल्या मुळक्या ई।

वेळा हुवतो गयो, पर म्हां बेगा-बेगा पग उठाया। आखर, जद सूरज मंझ-प्रकास में आयो, कमेड़यां रोई में बोलए लागी। दोपारं री लू सूं सूका पानड़ा उड उड मतूळियां में चढ़ग्या। बीं वगत, ग्वाळियां रा छोरा बड़ री छाया में, पएघन, पड़ए लाग्या, हूं इ बीं सरवर री पाळ रै सारै पाव मायं पाड़ो हुयग्यो।

म्हारा सगळा येली, म्हारै पासी हंस-हंस जोंवता गरब में माथा ऊंचा करयां मारग निसरग्या, कणई पाछौ मुड़र जोयो ई नंइ ।

वै सगळा यों मलघै मारग रै वन-जंगलां में मणं-दीठ हुयग्या । कंई ठा वां कित्तीक धरती लांघली ही ?

थरे धिन थो दुसड़ै रा जातरयां नैं । थैं सगला धिन हो ! सरमां-मरती हूं उठणो चावूं, पण मन में कोई उमंग इ नंइ । हूं तो पंछीड़ां रा गीतां, वासड़ली री तानां, अर कांपता पत्तां री रागां री गरब-हीण मणपार खुसी रै मांय मगन हुयग्यो ।

बांसां री छाया में औ म्हारी आंसड़ल्यां अर मुखड़ै माथै कंइ कौतक नाचै ।

हूं म्हारो मुगध डील ईयां धरती री गोदी में मेल देवूं । आंब्यां रै सूंगां री भीनी-भीनी सोरम मनैं व्याकळ कर नाख्यो । अर म्हारा नैण भंवरां री गुण-गुणाट में मींचीजण लाग्या । म्हारै जीव नैं, तावड़ै सूं घिर्‌योड़ै ईं कुंज में घणो सुख मिल्यो ।

हूं भूलग्यो कै, मारग रै माथै-बारै हूं क्यूं नीसर्‌यो ? कुण जाणै म्हारो डील ढीलो क्यूं पड़ग्यो ? म्हारी चेतणा, छाया, सौरम, गंध म्रह गीतां में बिलमायगी । कुण जाणै, मनै कद नींद घेर लियो ?

आखर जद बीं गैरी नींद में म्हारी आंख उघड़ी, तो जोवूं कै तूं म्हारै सिराणै ऊभी है, थारी मुळकण सूं तैं म्हारै अणचेत जीवण नै ढक राख्यो है ।

म्ररे हूं तो आई-चींतती रैवूं के कित्तोक मारग बाको रैयो ।

हूं जाणूं कै म्हारै चितमन सूं जागतो ई रैसूं । कारण जे सिंझ्या-पड़ी सूं पैली-पैली नंदी पार नंइ करी तो सगळी मैनत विरथा हुय जासी-पण, जद हूं थमग्यो, तूं कई ठा आप इ कद म्रायग्यो ?

•
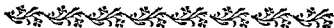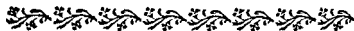
गुणपचास

[तव सिंहासन नेर आसन हते]।

हे नाथ । तूं थारे सिंघासण सूं हेटो उतर्यो अर म्हारे सूनै घर रै दुवारै आर ऊभग्यो।

हूं तो एकलो बैठो म्हारै मनमन में गीतड़ा गांवतो । बै सुर, जद थारै कानां में पूग्या, तो तूं हैटो ऊतर्यो ।

अर म्हारे सूनै घर रै दुवारै आर ऊभग्यो । थारै दीवाणखानै में घणांई गुणी जन है, अण घणांई गावणा हुवै—पण आज इं गुणहीणै रे बेसुरा गीतां में थारै प्रेम रो भणकार किया हुवै ?

थारै जगत री ईं तान में एक करुणा रो सुर आ'र मिलग्यो, अर तूं हातां में जैमाळा लियां आयो ।

हे नाथ । तूं म्हारै सूनै घर रै दुवारै आर ऊभग्यो ।।

●
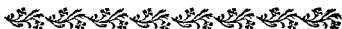
पच्चांस

[भामि भिक्षा करे फिरते]

हूं गांव रे गेलै-गेलै में भीख मांगती फिरतौ हो जद, तूं थारै सोनळरथ माथै नीसरयो-थारी वा कित्ती भनोखी सोभा भर कित्ती भनोखी साज। भो म्हारै नेणां में भजब सपनो हुवै ज्यूं लागण लाग्यो-भो कुण म्हाराजा भायो है ?

भाज किसीक सुभ-घड़ी में दिनड़ो ऊग्यो। अबै भनै दुवारै-दुवारै भीख मांगतां फिरणो पड़ै नइ। थारै निसरते ई मारग माथै, पैल पोत ऐ किणरा दरसण हुयग्या।
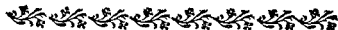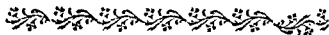
अरे ! औरथ चालतै-चालतै धन अर धान री धारावां, छोड़तो जासी, अर, हूं म्हारी मुठ्ठ्यां भर-भर'र ढिग रा ढिग मेळा कर लेसूं ।

अनामुरत जोवूं, कै रथ म्हारै कनै आ'र थमग्यो, अर म्हारै मुखड़ै पाखी जोंवतो-जोंवतो तूं रथ माथै सूं हंसतो-मुळकतो हेटै उतरयो । थारै चंरै माथै हरख देख'र, म्हारी सगळी बिथा मिटगी ।

बी वेळा, तैं थारा दोनूं हात मांडर अनामुरत कैयो, 'अरे, मनै कंइ देनी । अर इंयां कैंवते म्हारै आगै हाथ मांड दियो । अरे ! आ कंइ बात । राजाधिराज केवै 'मनै कंइ दे नी' ।
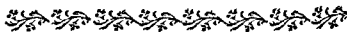
आ सुण'र थीं पड़ो हूं माथो नीचो करयां ई रेंयग्यो। अरे! थारै इसी कांई कमी है जका ईं कंगलै भिखारी कनै मांगै? आ तो तूं कोरो कौतक करै, अर मनै ठगै—ईयां कै'र मैं म्हारी झोळी मांय सूं एक छोटोसोक किणो, काढ़'र थीं नै दियो।

परे आ'र जद झोळी अड़काई तो, आ कांई? भीख में सोनैरो छोटोसो'क किणो! थीं राज-भिखारी नै जको मैं दियो, बो सोनो बण'र पाछो आयग्यो! जद हूं म्हारै नैणां में जळ भरयां झुरण लाग्यो—हाय! मैं म्हारो सरबस थनै रीतो क्यूं नीं कर दियो।

इकावन

[तखन रात्रि आंधार हल]

बीं रात रा, जद अंधारो हुयग्यो, म्हारा सगळा काम निवड़ग्या—म्हां मन में जाण्यो कै अबै कोई आवै नंइ। रात पड़्यां सूं गांव रा सगळा दुवारा दिरी'जग्या।

दो-एक जणा बोल्या, 'म्हाराज आवणा बाकी है।' म्हां हँस'र कंयो, 'आज अबै कोई आवै नंइ।'

सगळां ईंयां जाण्यो कै बारणो खुड़कै—म्हां फेर ईंयां ई कंयो 'नइ, ओ तो हवा रो खड़को है।'

म्हे दीया बधा दिया। सगळा आंगण में सोवाग्या आधी रात री बखत कोई धमाको सुणीज्यो-म्हां नींद री घमटेरा में जाण्यो, कै बादळ गरजै।

खिण-खिण में धरती थरहर कांपण लागी । दो-एक जणा बोल्या 'रथ रै चक्कां री भणभणाट है ।' पण नींद रै नशे में म्हां कैयो, 'नईं भा तो बादळां री ई गाज है ।'

पौ रात रै अंधारै में नगारो बाजण लाग्यो-कणाई हेलो दियो, 'जागो समस्त लोगां—अबै ढील मत करो', म्हांरी छाती माथै दोनूं हाथ धर्‌या अर म्हे डर सूं कांपण लाग्या ।

दो एक जणा कानां में कैवण लाग्या, 'ओळी, राजा रै रथ री धजा' । म्हे जाग'र बोल्या, 'अबै ढील मत करो ।'

कठै तो चानणी, कठै माला, अर कठै है त्यारी ? राजा म्हारै गांव में पधारया है, अरे ! सिंघासण कठै ? हाय रे भाग ! लाज जावै है ! कठै है दीवान-तखत ? अर कठै है साज-सजावट !

दो-एक जणां कानां में कंयो, 'विरथा है कूकणो रीता हातां ई सूनै घर में बीरो आवभगत करो। अर दुवारा खोल दो रे। संख बजावो रे संख। आज ई घणघोर रात में अंधारै घरां रा म्हाराज पधारिया है।'

अकास में बजरपात हुवै ज्यूं बादळ गाजै, बीजळी री भळभळाट में, फाट्योड़ा गूदड़ा ई बिछावो, साज-सजावट करो।

आंधी रै सागै अनासुरत दुख री रात रा राजाजी आयम्या है।

बावन

[भेवे छिलाम चेये नेव]
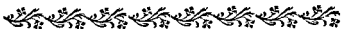
म्हारै मन में ग्राई, थारै सूं कंइ मांगूं—पण हीमत पड़ै नंइ, बीं माळा नै मांगण री, जका सिझ्यारी वखत तूं थारै गळे में पैर्‌यां ही। हूं सोचती रैयी कै परभाते, तूं जद नदी रै पार जासी परो, टूट्योड़ी माळा सेज रै नीचै पड़ी लाध जासी। इण खातर हूं मंगती हुवै ज्यूं परभाते ई वठै गयी-फेर ई मांगण री हीमत पड़ी नंइ।

पण ग्रा तो माळा नंइ, थारी तरवार है। ग्रगण री झळ हुवै ज्यूं तेजवान ग्रर बजर सूं ई भारी, ग्रा थारी तरवार जका है!

परभाते, जंगळे मांय सूं सोनळ किरण्यां, थारी सेज माथै सोवण लागगी। ग्रर चिड़कल्यां बूझण लागी, 'ग्रे नार! तनै कंइ लाध्यो!'

'ना तो आ माळा है, ना चाळ है, अर ना गुलाब जळ री झारी इ है। आ तो थारी डरपावणी तरवार है।'

पद री बैठो हूं अचूंभे में आई बात सोचूं, 'ओ कंई थारी दान ? हूं अबळा लाजां मरूं, आ गैणो मनै कंइ सोवै।

जकं नै छाती माथै धरतां ई म्हारो जीव विथा पावै। पण, आ तो थारी भेंट है ! जिण सूं ईनै, ई वेदना रै मान नै; हूं सेन करसूं, थारै ई दान नै !

आज सूं ई जगती में हूं भौ छोड़ देसूं। आज सूं म्हारा सगळा कामां में थारी ई जै-जैकार हुसी; हूं सगळो मोव छोड़ देसूं।
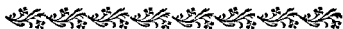
मौत नै तूं म्हारी सग्रेली बणा'र, म्हारै घरे राखग्यो है। हूं ईं री वरण कर'र ईं मैं जीव घाल सूं। थारी भ्रा तरवार म्हारा बंधण काट नाखसी—हूं सगळी भो छोड देसूं।

ग्राज सूं हूं म्हारै ग्रंग माथै कोई दूजो साज-सिणगार करूं नंइ। हे म्हारे हिवड़ै रा जिवड़ा। जे तूं पाछो ग्रा जावै तोई नइ! हू ग्रबै कोई दूजो साज करूं नंइ। थारै खातर हूं घर रै बारै किणी मिनख सूं लाज करूं नंइ।

आज तै थारी तरवार सूं मनै सिणगारी है। ग्रबै हूं दूजो सिणगार करूं नंइ।

तिरेपन

[सुन्दर बटे तव अंगद खानि]
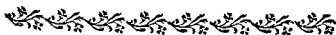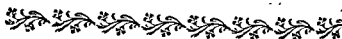
था री कड़ी फूटरी है, ईं में तारा हुवै ज्यूं नगां री जड़ाव है, भांत-भांत रा सोवणा लुभावणा रंगां में मीनैं भर रतनां री सोभा न्यारी ई है।

पण थारी तरवार मनै इण सूं ई घणी मोवणी लागै, जकै री बांकी धार बीजळी ज्यूं तीखी है। जाणै आंथतै सूरज रै रगतवरण उजास सूं दीपती गरुड़ री उडाण भरती पांखां हुवै।

आ जीवण रै अंतकाळ री सांस ज्यूं मौत रै आखरी फटकारै सूं थर-थर कांपती वेदना ज्यूं कांपै। म्हारै कनै जका कांई है, वीं नै पलभर में भसम करती आ म्हारी तीखो-गैरी चेतणा-सगती है।

थारी कड़ी फूटरी है, ईं में तारां री जड़ाव है। पण थारी खसार, हे वजरपाणी। अंत-न-पार फूटरी है।

चौपन

[তোমার কাছে চাই নি কিছু]
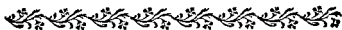
थारै सूं कंई मांग्यो नंइ, अर ना म्हारो नांव इ बतायो। तूं जद वीर हुयो, हूं बोली—वाली रैई। कूवं री पाळ माथै, हूं अेकली नीम रै तळै ऊभी ही। सगळ्यां आप-आपरा कळसा भर-भर गयी परी।

वां मंनै घणाई हेला पाड्या, 'अरे अे ! वखत बीत्यां जावै।' पण कंइ ठा हूं किसी भावना में आळस कर्यां बैठी ई रैयी।

तूं कणै आयो, मैं थारै पगल्यां री चाप ई सुणी नंइ। जद नैणां में करुणा भर्यां बैठ्योड़े कठां सूं तैं कैयो—'हूं तिसां-मरतो पंथी हूं' अर सुणतै ई हूं चमकी, अर जळ री धारा थारी चूक में ढाळण लागी।
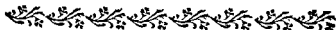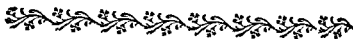
ऊपर पानड़ा बाजे, अर झुरमट मांय सूं कोयलड़ी री कूक सुणीजे, अर गांव रै मारग री मोड़ मायं सूं बावसा रै फूलड़ां री सुगन आवण लागी।

जद तैं म्हारो नांव बूझ्यो हूं सातां भरगो–थरै थारै मन नै सुवावणो, इसो कंइ काम मैं करयो हो, जको तूं म्हारो नांव बूझै ?

थारो लिख सुभावण खातर, मैं थोड़ो-थोक पाणोड़ो लनै पायो हो—थाई बात म्हारै हिवड़ै नै थायरो देसी।

हुवै मायं, दोपारै री वेळा, डाल ई पंछीड़ा बोलै अर नीमड़े रा पान बिछाई करै अर हूं थटे बैठो चौवणां ई आवूं।

•

पचपन

[बेला कादास नागो]

बखत नै मत टाळ-कंई भो परमात थारै नैणां री
नींदड़ली नै निवारै नंइ ? तैं भा बात सुणी का
नंइ, कै कांटां रै वन में फुलड़ा विगसै ? भरे !
भाळस छोड'र जाग ! जीव तौ सरो जाग'र।
बखत ने मत गमा !

ई भीणें मारग रै पार किसो रंज-रोभां रै मांय,
म्हारो भायलो अेकलो ई है ? बीं नं टिला मत !
जाग, इण वेळा जाग ! बखत ने मत गमा !

कंई हुवै, जै सूरज रो तोतोड़ो तनत सूं सूक'र, धामो घर-घर धूजण लागै! कंई हुवै जं बळबळतो वैसळू धापरै तिशा-मरतै पत्तै सूं धाड़ं सूंट ढक जावै !

मन रै मांय जोय तो तारी कं धाणंद है का नंइ। मारग रं पग-पग माथे बाजतो दुसहं रो बांसड़लो, थनै हेला पाड़ै !

मीरा मधुर सुर बाज'र तनै कैवै जाग। अबै जाग ! बखत नै मत गमा !

●

छप्पन

[भाई तोमार आनन्द आमार पर]

सूं थारै चित सूं म्हारै माथै राजी है। जिणसूं
तूं ईं मिरतलोक में हेटो उतर परो आयो।

जे हूं नंइ हुवतो तो हे तिरलोकी रा नाथ!
थारो मो प्रेम कूड़ो लखावतो।

मनै साथै लेंर तैं औ मेळो लगायो। म्हारै हिवड़े
में थारी रंगभर लीला हुवती जावै। म्हारै जीवण
में भांत-भांत रा रूप धर्‌यां-थारी मरजी री
तरंगां उठै!

इण खातर ई तो तूं राजावां रो राजा वण'र
म्हारै मनड़ै नै थारै मोवन-भेस सूं मोवै। हे प्रभु!
इण सूं ई तूं सदा जागतो रैवै !

हे प्रभु ! इं तांई हेटो उतर'र थारै भगतां रै
प्राणां में प्रेम वण'र बसग्यो भर इं जुगल-मिलण
में थारी मूरत रो पूरण सरूप दीपै।

●

सत्तावन

[भालो भामार, आन्नो, भोगो]

चानणो ! म्हारो चानणो ! भुवण-भुवण में
भर्‌यो चानणो ! म्हारो नैणां सारो चानणो !
हिरदै-मोवणो चानणो !

नाचे, चानणो म्हारे प्राणां में नाचै है रे भाया !
म्हारे घट-घट में भो समायो है !

बाजै, चानणो, बाजे रे भायां, म्हारै हिरदे री
बीणा में चानणो बाजे ।

भाभो ई री जगमगाट सूं जागै, वायरो छूटे, घर
सगळो धरती हंसै-खिलै ।
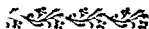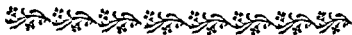
इण भांत ई तो तूं राजावां रो राजा बण'र म्हारै मनड़ै में थारै मोवन-प्रेम सूं मोवै। हे प्रभु! इण सूं ई तूं सदा जागतो रैवै।

हे प्रभु ! ईं तांई हेटो उतर'र थारै भगतां रै प्राणां में प्रेम बण'र बसग्यो पर ईं जुगल-मिलण में थारी सूरत रो पूरण दरस दीवै।

●

सत्तावन

[भलो मामार, ज्ञानी, भोगो]
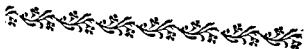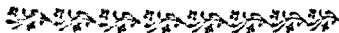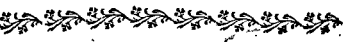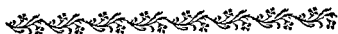
चानणो ! म्हारो चानणो ! भुवण-भुवण में
भर्यो चानणो ! म्हारी नैणां सारो चानणो !
हिरदै-मोवणो चानणो !

नाचै, चानणो म्हारे प्राणां में नाचै है रे भाया !
म्हारे घट-घट में भो समायो है !

बाजै, चानणो, बाजै रे भाया, म्हारै हिरदै री
बीणा में चानणो बाजै ।

आभो ई री जगमगाट सूं जागै, धायरो छूटै, अर
सगळो धरती हंसै-खिलै ।

थानएं रै ई समदर में हजारूं फूंदुयां हजारूं पांरवांरा पाल ताण्यां तिरै, अर जांय-मालती ईरी लेर्‌यां में नाचै ।

वादळ-बादळ माथै सोनौ विखरग्यो रे भाया! अर माणक मोत्यां री तो कोई पार ई नंई । पान-पान माथै हंसी छायगी, अर मुळकण-फुळकण रा तो ढिग ई लागग्या ।

सुर-गंगा रा सगळा घाट इण इमरत रै झरणै री बाढ़ में डूबग्या ।

अट्ठावन

[बेन सेव गाने मोर सब रागिनी पुरे]

म्हारे ढेरसी गीत में, सगळो रागण्यां समाय जावै
पर म्हारो सगळो प्रणाम थारा पुरां में रळमिल
जावै।

एकै प्रणाम, थूं माटी री धरती हेठे-विरद्ध, बेल
पर पाथ पोओ छोड़'र जकै में मगन हुय जावै।
एको प्रणाम, जीवण-मरण री गंगा रह भुवण-
भुवण मे भटकतो फिरै यो ई प्रणाम थारा पुरां
मे रळ-मिल जावै।

एको प्रणाम आयो यो सरब पार'र दूजै प्राण
में थारो संसार सूं जगा जावै।

एको प्रणाम, गंगा रै जळ में दुबाई रै मान
पवन मायं रा'र घटक जावै—पर, एको प्रणाम
थारो सरबत पूज ने ई नाम देवै।

एकै प्रणाम में दुबाई सूं सबद ई भीतरै नह
कोई प्रणाम थारा पुरां में रळमिल जावै।

●

गुणसठ

[एइ तो तोमार प्रेम ओगो हृदयहरण]

अरे म्हारे हिवड़े रा चोर ! ओ तो थारो ई प्रेम है, जको पानड़ां माथै सोनळ रगां में नाचै। ओ जको मुधर-माळस सूं भर्यो बादळ-बादळ माथै तिरै।

ओ प्रेम, जको यापरी वण्यां डील माथै इमरत सो लागै। अरे हिवड़े रा चोर! ओ तो थारो ई प्रेम है।

आज परभाते, चानणे री धारावां में म्हारा नैण अळूझग्या, अर ईंयां थारै प्रेम रा बोल म्हारै मनड़ै में बसग्या।

थारो ओ मुखड़ो म्हारै मुखड़ै माथै निवै, नैणां में नैण घाल्यां जावै, अर आज म्हारो हिवड़ो, थारै चरणां री परस करै।

समदर ऊफरा-ऊफरा'र हंसे अर समंद किनारै रो मुळकरा पीळो पड़्यां जावै। डरपावरणो छोळां, टाबरां रे कानां में अटपटा गीत सुरणावे, जियां पालरणै में सुवारण'र, मां गीगै ने हुलरावती हींड़ा दियां जावै।

समदर, टाबरां सागै रम्मरण लागै, अर समंद किनारै रो मुळकरण पीळो पड़्यां जावै। जगत रे समंद किनारै टाबर रम्मं।

गिगन-मंडळ में आंधी उठै, अर अळघै समदर रै जळ में जाज्यां भवर-जाळ में डूबती जावै। मिरतू रा दूत उड़ता-उडता आवै परण टाबर तो रमता ई रेवै। जगत रै समंद-किनारै टाबरां रो मोटो मेळो मंड्यो है।

•

हां, आ बात मैं सोनां रै मूंडै सुणी है—दूज रै चांद री गुंवी अद्रमी किरण्यां, सरद रुत रै लुकतां छिपतां बादळां री कोर माथै पड़ी, जद ओस सूं धुप्योड़ै परभात रै सपनां में इण रो जलम हुयो आ मुळकण जका नींद में मणचेत टाबर रै होठां माथै रमै।
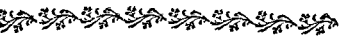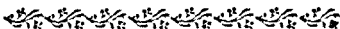
टाबर रै डील माथै जकी कवंळी लुणाई अर लाली खिल्योड़ी है—कोई जाणै वा इत्ता दिनां कठै लुक्योड़ी ही ?

थो टाबर री तेजधारी डील मांड्यां ई उघाड़े नई कोइ जाणं, इणरा नैण किण मार सूं मूंद योड़ा है ?

सोनळ किरणां रे जाळ सूं जको ई संसार नै ढके, वो चांद, आपरी चानणां नै ई री पलकां माथे मेल राखी है ओ तेजवत डील री टाबर जिणसूं आंख्यां ई उघाड़े नइ ।

●

तीरेसठ

[कत अजानारे जानाइले तुमि]

किताई अण-जाण्यां सूं तैं म्हारी जाण-पीछाण कराई, किताई घरां में मनै मान दिरायो।

तैं अळगां नै नैड़ा कर्‌या, पारकां नै भाई बणाया।

जूनो ठोड़ छोड़'र जद हूं जावूं, मन में सोच हुवै, थंई जाणै कंई हुसी, पण हूं ई बात नै घणी वेळा भूल जावूं, कै सगळी नुंवी मुलाकातां में तूं ई एक पुराणो बेली बण्योड़ो है!

तैं अळगां नै नैड़ा कर्‌या, पारकां नै भाई बणाया!

जीवण-मरण में, सगळै भुवण में जठै-कठैई सूं मनै तूं ले जावै, हे म्हारा जलम-जलमांतर रा ओळखीता! तूं म्हारी सगळां सूं जाण-पीछाण करावै।
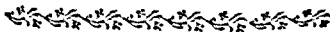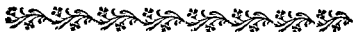
थारै लोभी हातां में, हूं जद मीठो देवूं, हूं जाणूं के
फूलां रे मांय सेत क्यूं भरीजै, नदी रो जळ सुवाद
क्यूं हुवे, अर फळां में मीठो गुट रस क्यूं व्यापै !
हां, जद हूं थारै लोभी हातां में मीठो ला'र देवूं!

जद हूं थारे मुखड़े माथै मुळकण देखण नै थारो
बाच्यो लेवूं—हूं जांणूं, के प्रकास आपरे चानणै
सूं म्हारे मुखड़े माथे सुख री लाली क्यूं रचावे,
घर बायरो म्हारे हिवड़े ने इमरत रस सूं क्यूं
भरै—हां, था हूं थारै मुखड़ै नै चूमूं जद समझूं।

●

तीरेसठ

[कत आजानारे जाना दूने तुमि]

किताई घरा-जाण्यां सूं तैं म्हारी जाण-चीण कराई, किताई घरां में मनै मान दिरायो।

तैं भळघा ने नेड़ा कर्‌या, पारका ने भाई बणाया!

जूनी ठौड़ छोड़'र जद हूं जावूं, मन में सोच हुवै, कंइ जाणै कंइ हुसी, पण हूं ई बात ने वीं वेळा भूल जावूं, कै सगळी नुंवी मुलाकातां में तूं ई एक पुराणो वेली वस्योड़ो है!

तैं भळघा ने नेड़ा कर्‌या, पारका ने भाई बणाया!

जीवण-मरण में, सगळै भुवण में जठै-कठैई तूं मनै ले जावै, हे म्हारा जलम-जलमांतर रा जाणीता! तूं म्हारो सगळां सूं जाण-पीण करावै।
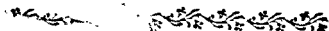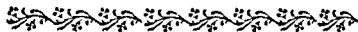
तैं मळघां नै नैड़ा कर्‌या, पारकां नै भाई बणाया !

तनै जाण्यां पछै. कोई पारको रैवै नंइ, सगळा ई आपरा हुय जावै—ना कोई बरजै, अर ना कोई रो मो रैवै। सगळां सूं मिलावतो, तूं नित-नित जागतो रैवै—जद जोयो, तनै पायो।

तैं मळघां नै नैड़ा कर्‌या, पारकां ने भाई बणाया।
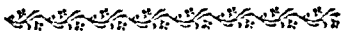
●

ईंयां हूं वीं घास मांय सूं जोंवतो ई रेंयग्यो, पर दिवलो विरथा ई वेंवतो गयो ।

सिझ्या—पड़ी, अंधारो हुयग्यो, जद म्हां वींनें हेलो पाड़र बूझयो 'थारे घर में दिवला संजोयां पछे, ओ दिवलो तूं कीनें सूंपण ने जावे ? म्हारे घर में चांनणो कोनी, इण सूं ओ अठे मेल दें नी, ओ वाला ।
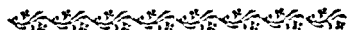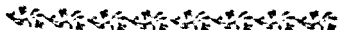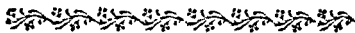
अंधारे मे दोनूं काळो आंख्यां सूं बीं पळ भर
म्हारे कानी जोयो, अर बोलो, हूं दिवलं ने
दीयाळी में सजावण खातर लाई हूं ।

मैं जोयो, के लाखूं दीयां रे सागे बो दिवलो
बिरथा ई बळतो जावै ।

पैंसठ
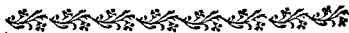
[हे मोर देवता, भरिया ए देह प्राण]

हे म्हारा देवता ! म्हारै ईं मन-काया रै प्याले मांय सूं, किसो इमरत-रस तूं पीवणो चावै ?

म्हारै नैणां सूं थारी सिस्टी री छिब देखण री साध कद पूरी हुसी ?

हे कविराजा ! म्हारा मुग्ध कान सांती सूं थारा गीतां नै सुणना चावै।

हे म्हारा देवता ! म्हारै ईं मना-काया रै प्याले मांय सूं, किसो इमरत-रस तूं पीवणो चावै ? म्हारै चित में, थारी सिस्टी री सोभा श्रेक श्रनोखी वाणी री रचना करै, श्रर वोरै सागै थारी प्रीत मिल परो म्हारा गीतां में राग्यां नै जगावै।

मनै थारो सरूप दान कर'र ईंयां तूं हेत जतांवतो थारी सगळी मधर-भावना म्हारै मांय देखण री साध पूरी करै !

हे म्हारा देवता ! म्हारै ईं मन-काया रै प्याले मांय सूं, किसो इमरत-रस तूं पीवणो चावै ?

●

छ्यांसठ

[जीवने जा विर दिन]
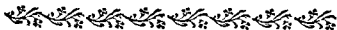
जीवरण में नित-नित जका म्हारै अंतर में ध्यान-मातर बल्योड़ी रेयी, परमात रै चानणैं में जकै आपरो गूंवटो इ उघाड़्यो नंइ उणने; म्हारै जीवरण रे सेस-दान रै सेस गीत में, हे देवता! आज थारै अरपण कर देसूं ।

परमात रै चानणै में जिण आपरो गूंवटो ई उघाड़्यो नंइ !

हूं, वा म्हारी आसरी भेंट थारै अरपण करूं। सबद जेकै ने वाणी में बांधर' राख नंइ सक्या, गीत जकै ने सुरां सूं साध नंइ सक्या। हे मीत! हूं वीं मोवन सरूप नै सगळे जगत री निजर बचा'र, छानै-मानै हिवड़े में लुका'र राखसूं ।

परमात रे चानणे में जकै आपरो गूंवटो ई उघाड़्यो नंइ !

]
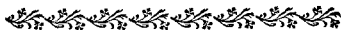
जकै खातर देस-देस में फिर्यों अर जीवण री सगळी उथळ पुथळ सूं घिर्यां रैयो। सगळां विचारां अर धंधा में म्हारै सरवस रै सांथ, नींद अर सपनां में जकी एक बस्योड़ी रैयी।

परभात रै चानणें में जकै आपरो गूंवटो ई उघाड्यो नंइ, वा म्हारी आखरी भेंट थारै अरपण करूं।

कित्ताई दिनां तांई, कित्ताई लोग, वींनै लेवण खातर विरथा ई आया। पण बै सगळा घर रै बारै सूं इ पाछा फिरग्या। वा किणनैं इ जाणें नंइ, थारै सूं बीरी जाण चीण है, इण आसा में ई वा थारै लोक में पूगगी है।

परभात रै चानणें में जकै आपरो गूंवटो ई उघाड्यो नंइ, वा म्हारी आखरी भेंट थारै अरपण करूं!

सिड़सठ

[एकाधारे तुमिइ आकाश तुमि नीड़]
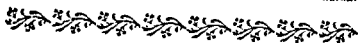
थारो ई एक आसरो है, तू ई आकास है, अर तूं ई म्हारो माळो है। हे सुन्दर! ओ माळो थारै प्रेम सूं भर्यो है! पल-पल में अनेक भांत रा रूप, रंग गंध अर गीतां सूं, म्हारा प्राणां नै चारां कानी सूं ओ मुगध बणावै।

जकै आळै माथै ऊखा, हात में सोनळ थाळ लियां आवै जकै में, एकै कानी माधुरी सरूप री माळा है। जकै नै धोरै सेक आय'र वा धरती रै लिलाड़ माथै, नित-नित पैरावै।

जठै, सिंझ्या नीची घुण-घाल्या गायां सूं सूनी रोई रै ऊजड़ मारग सूं हात में सोनळ झारी लियां आथूणै समदर री सान्तीजळ भर्यां आवै!

जठै, तूं म्हारी आतमा रै अकास री अणपार होड़ माथै विराजै, जका निरमळ अर ऊजळो दीसै, जठै ना तो दिन है ना रात, जीव है, ना जंत, रंग है न गंध, अर जठै सबद-मातर ई नंइ!

●
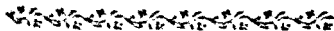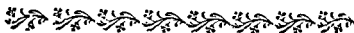
गुणंतर

[ए मामार शरीरेर शिराय शिराय]

म्हारै डील री नस-नस में जकी जीवण-धारा रात-दिन बैवती जावै, वा इण आखै संसार नै जीतण नै चाली है। आ तो प्राणां रो सरूप हुवै ज्यूं छंद-ताळ लेरै सागै भुवण-भुवण में नाचती जावै।

वा ई प्राण-सगती धरती री माटी रै रोम-रोम मांय सूं घाणै मानै लाखूं तिणखलां रै रूप में हरख सूं मुळकण बिखेरै। जकी सगती कंवळी कूंपलां अर फुलड़ां में रस बरसांवती बिगसै।
वा ई प्राण सगती जनम-मरण रै समंद-पालणै री लैरयां दांई ज्वार-भाटै रा अगम झोटा देवती जावै।
मनै ईंयां लखावै, जाणै एक अणंत प्राण-सगती म्हारै अंग अंग रै मांय सूं बगती है। अर ईंयां वा मनै इणवां मान बगसै।

वा जुगां जुगां री विराट चेतणा म्हारी रग-रग रै मांय आज नाचै।

●

सितार

[पारवि ना कि जोग दिते एइ छंदे रे]

कंइ ई छंद में तूं थारो जोग देवै नंह ? जकै में डूबण, वैवण अर गळण में आणंद भरयो है।

तूं कंई कान खोल'र नंइ सुणै के आकास रै चांद-तारां री चानणी में मरण-वीणा रा किसा सुर दिस-दिस में बाज्यां जावै ?

ए सगळा अगन री झळां रै आणंद में मगन हुयोड़ा कठै नाचता फिरै ? इण मस्ती रा गीतां री तान में रीझ्योड़ो, कुण जाणै वो कठीनै भाजतो फिरै। वो पाछो फिर'र जोवणो ई चावै नंइ अर किणी बंधन में बंध्योड़ो रैवै नंइ।

ईनै तो लूंटण में अर बंधणां सूं छूटण में ई आणंद मिलै।

इण आणंद रै सागै पग-धरतो, छवूं रुतवां हरख कोड में नाचती-कूदती आवै।

वे इण रै रंग गीत अर गंध नै धार्‌यां धरती माथै आवती-जावती रैवै। सगळाई इण अणपार आणंद नै लूंटता-लूंटावता अर ईं में समोवता ई जावै !

इकोतर

[थामि आमार करव बड़ो]

हूं मनै वडो वणावतो जावूं, भाई तो थारी माया है। हूं थारै तेज नै म्हारी छायां रै रंगां सूं रंगतो जावूं।

तूं थारै असल सरूपनै ईं माया-रूप सूं अळगो राखै, वीनै न्यारै न्यारै नांवां सूं बतळावै ईं थारै सूं थारै रूप-विरै में म्हारी काया रो जलम हुवै।

विरै रै गीतां री रागणी इण जगती रै अकास में गूंजती जावै। कोई हरख-सोग अर कठेई आसा अरमो रा भाव प्रिगटावै।

आ विरै गीतां री रागणी कठेई छोळां में चढै ऊतरै, कठेई सपनां में मंडै अर टूटै—तौं म्हारै मांय थारी ईं हार री भारी रचना करो !

•
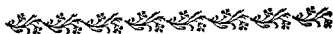
भो पड़दो जको तैं नाख राख्यो है, इण माथै तूं
रात-दिन री कूंची सूं हजारां रूपां रा चितराम
कोरै। जकै रो ओट में थारै बैठण री सिंघासण,
भांत-भांत री बांकी बणगत में सोवै !

आज आभै में थारो-म्हारो मेळो लाग्योड़ो है,
थारी-म्हारो रम्मत दूर-दूर तांई हुंवती जाव।

थारी-म्हारो गुणगुणाट सूं वन-कुंजां में बादरो
गूंजै भर थारै-म्हारै आवण-जावण में ई सगळो
वेळा वीत्यां जावै।

●

चवतर

[आर नाई ने वेला]

दिन ढळण लाग्यो, धरती माथै छाया उतरगी। अरे! चालो ए अबै घाट माथै सूं कळसा भर लावां!

जळधारा री कळकळ सुर सिंझ्यां पड़ी रै आमर नै आकळ-व्याकळ करै—अरे! मारगिये पार वो मने आं सुरां में हेला पाड़ै! चालो ए! चालो घाट माथै कळसा भर लावां!

ईं वेळा ईं सूनै मारग माथै कोई आवणो-जावणो करै नंइ। अरे! पूंन छूटगी है, जकै सूं प्रेम री नदी में लैरां उठै!

कंइ ठा, आज पाछो जावणो हुसी का नंइ। कंइ ठा आज किण सूं म्हारी पैचाण हुसी? परलै घाट माथै नाव में बैठो वोई मणजाण वीणा बजावै! चालो ए घाट माथै, कळसा भर लावां!
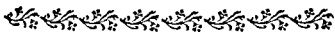
●

पिचंतर

[मर्तवासी देर तुमि जा दियेछ प्रभु !]

हे प्रभु ! म्हां मिरतलोक रा वास्यां नै जको दान देवै, बो ईं लोक री सगळी आस पुरावां ई छूटै नंइ अंत में बो सेस बच्योड़ो दान थारै सूं मिलण सारु, थारो मारग जोंवतो फिरै !

नदी, आपरा नित-नित रा सगळा काम सार'र, आपरी अखंड धारावां नै लियां, थारै चरणां में नित जळरी अंजळी रो रूप धार्‌यां भरती आवै ।
फूल, आपरी सौरभ सूं सगळे संसार नै मं'कार भूलै नंइ । थारी पूजा में ई बो'री आपरी सेवा रो फळ मिलै ।

थारी पूजा सूं संसार । रीतो हुवै नंइ । अबो, आपरा गीतां में कवी जका कंवै, भांत-भांतरा लोग बो'रा भांत-भांतरा अरथ लगावै पण बांरो आखरी अरथ तो थारै सांमै ई हुवै ।

छियंतर

[प्रतिदिन आमि हे जीवन-स्वामी]

हे जीवन-स्वामी ! हूं नित हमेस थारै सनमुख— ऊभो रैसूं। हे भुवण रा नाथ ! थारै ई सनमुख हाथ जोड्यां ऊभो रैसूं।

थारै ई अणपार अकास हेटै, सूनी ठौड़ में, म्हारै नैणां में जळ भर्यां अर हिवड़ो निवायां, हूं थारै ई सनमुख ऊभो रैसूं।

थारै ई अनोखै भव-संसार मे करम रै अणपार सागर में, सगळै जगत रा लोगां मांय हूं थारै ई सनमुख ऊभो रैसूं !

थारै ई भुवन में, जद म्हारा काम समापत हुसी हे राजवां रा राजा ! हूं बोलो—बातां एकलो ई थारै सनमुख ऊभो रैसूं।

•

सितंतर

[देवता जेन दूरे रइ दांड़ाये]

तनै देवता जाण'र हूं अळगो ऊभो रेवूं— आपरो जाण'र मांत करूं नंइ। हूं तनै बाप समझ'र पगां लागूं—भाई कै'र बाथ में भरूं नंइ।

थारे साचले प्रेम सूं तूं म्हारो बण'र हेटो उतर'र आवे। पण बीं सुख में हूं तनै वेलो जाण'र गळै लगावूं नंइ।

हे प्रभु ! तूं म्हारो भायां मांयलो भाई है। पण हूं तोई वां भायां कानी जोवूं नंइ। भायां रै सागे म्हारे धन नै बांट'र ईं या थारी मूठ्यां भरूं नंइ।

हूं सगळां रै सुख-दुख में सीर करूं नंइ, अर ईंयां थारे सनमुख आर ऊभूं नंइ।

जकै प्राणां रो मनै मोह है, वै म्हारा प्राण दुख-निवारण कारण सारूं वो प्राणां रै समदर में एक चिब्बी लावण-मातर रो भाग पण मनै मिलै नंइ !
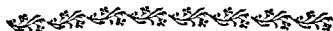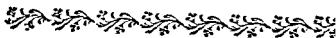
●

इठंतर

[विधि जे दिन क्लान्त दिनेन]

विधाता, जकै दिन इँ सिस्टी रैं काम नै पूरण कर्यो, वी दिन लीलै प्रकास रैं मांय सगळा तारा दमकरण लाग्या ।

नुंवी सिस्टी नैं सामी राखर सगळा देवतां वीं देव-सभा में आपरैं दळ-बळ समेत आ'र बैठग्या ! तारां पासी जोय'र बोल्या 'किसो'क आणंद है ! आ किसो'क पूरण छिब है । किसो'क मंतर भर मनोखो छन्द है, आं चांद–सूरज–तारां रो !'

वीं वखत सभा में अनासुरत ई कोई बोल्यो 'इँ ज्योत री माळा मांय सू एक तारो कठैई टूटग्यो ।' वीणा रा तार टूटग्या, गावणो थमग्यो–टूटोड़ो तारो कठै गयो ? सगळाई जोवण लाग्या ।

सगळां ई कैयो 'बो तारो तो सुरग रो चानणो हो, बोई सगळां सूं बडो अर फूटरो हो। ।

बीं दिन सूं ईं जगत में बीं तारै रो हेरो हुवै।
दिन में तिरवत मिलै न, रात में आंख ई झपक।

सगळा कैवै, 'सगळा बीं तारै नैंई पावणो चांवा' अर फेर बोल्या, 'बीं रै गयां पाछै औ भुवण काणो दीसै।'

रात री गैर-अंधारी सांती में तारां री—टोळ्यां आपस में छानै-मानै मुळकती बातां करै, 'आ खोज कूड़ी है। आपां सगळा ई तो अठै हां!'

•

गुणियांसी

[जदि तोमार देखा न पाई]
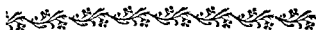
हे प्रभु ! जे ईं जीवरा में, तनै पितरख देख नंइ पावूं, तौ म्हारै मन में ग्रा'ई बात हरदम रेवै के तनै हूं पाय सक्यो नंइ। ग्रा बात हूं दुखड़े में ई भूलूं नंइ–सोंवतां ग्रर सपनां मे'ई नंइ !

ईं संसार री हाट में म्हारा जित्ता दिन कटै वांमें हूं म्हारै दोनूं हात भर-भर चावै-जित्तौ धन संचूं तौ ई म्हारै मन में ग्राई बात वसै, के म्हे कंई पायो ई नंइ ? ग्रा बात हूं सोंवते ग्रर सपनां में ई भूलूं नंइ।

भे हूं आळस में थक'र मारग माथै बैठ ई जावूं अर जे धूळ रौ ई बिछावणो करलूं—म्हारै मन में आई बात बसै कै हाल सगळो मारग बाकी पड़्यो है। हूं दुखड़ै में सोंवते अर सपनां में ई आ बात भूलूं नंइ।

कित्तोइ हंसी-खुसी हुवै, अर घर में चावै सुख री घंसी ई बाजण लागै, अरे, म्हारै घर में चावै जित्ती साज-सजावट हुवै तोई आ बात म्हारै मन में बसै कै म्हारै घरै तनै हूं बुलाय सक्यो नंइ। हूं दुखड़ै में सोंवते अर सपनां में ई आ बात भूलूं नंइ!

●

अस्सी

[भामि शरत् देघेर मेघेर मतो]
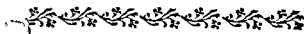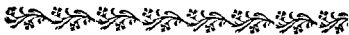
हूं सरद रुत रै छेड़लै बादळियै दंइ थारै गिगन-मंडळ रै खुणै में नित बिना कारण ई फिरतौ रेवूं। तूं म्हारौ नित-नित रौ संगी, सुरंगौ सूरज है! आज थारी किरणां थारै चानणै सागै मिल'र, मनै थारै परस सूं भाप बणा'र उडायो नंइ—थारै सूं बीछड़्यां पाछै, हूं केई महनां, अर बरसां नै गिण-गिण काढूं।

अरे! जे आई थारी मरजी हुवै तौ तूं नित-नित इसा नुंवा-नुंवा खेल करचां जा। म्हारी ई खीणता रा कणूका ले'र आंमें भांत-भांत रा रंग भर, थारै सोनै में आंनै मंड, वायरै री धारा में आंनै अठै-ऊठै बेवाव!

अरे ! आधी रात री वेळा जद थारै मन में आवे, ईं खेल नै पूरो करे। हूं वीं अंधारे में आसूंड़ा वण'र झर जासूं। परभात री वेळा, हूं इण कोरी धोळी-ऊजळी छिब में मिल जासूं, अर ईं मण दाग निरमळ मुगत अकास सागे हूं चारां-कानी हंसती-मुळकती ई रै जासूं।

बादळां री ईं रम्मत में हूं ज्योत रै वीं समदर में रळ-मिल जासूं।

इक्यासी

[माझे-माझे कत वार मावि]
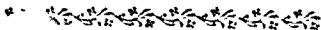
बिच बिच में कित्तीइ वार हूं बीतै दिनो री सोच करूं कै आज री वेळा अकारथ ई बीतगी, दिन तौ निसफळ ई गयो।

पण हे म्हारा प्रभु। वै सगळा खिण निस्फळ हुवै नंइ, जद वांनै तूं थारै खातर मंजूर कर लेवै।

हे अंतरजामी! घट-घट रै मांय लुक्योड़ो तूं मोको पाय'र बीज नै रूंखड़ी रो रूप दे'र जगावै, अर कूंपळां नै कळ्यां रै रूप में विगसा'र वांमें भांत-भांत रा रंग रचावै, फूलां नै तूं इमरत-रस सूं भर'र फळ बणावै, अर बीजां नै गरभावै।

हूं नींदाळू—आळस री सेज माथै थाक्योड़ो पड़्यो चीतूं कै कंइ सगळा काम बाकी ई पड़्या रैसी ?

पण परभातै उठ परो नैण ऊघाड़'र जोवूं तौ म्हारी सगळी बाग फूलां रै कौतक सूं भरयो है!

●

बयांसी

[हे राजेन्द्र, तव हाते काल अंतहीन]

हे राजन ! थारै हात में अंत-न-पार बखत है ! इणरी गिणती कोई कर सकै नंइ-रात अर दिन आवै-जावै । जुग-जुगांतर फूलै अर खिरै ।

तनै कठेइ ढोल हुवै नंइ अर ना थारै ऊंनावळ ई है—तूं तो उडीक करणी जाणै ! म्हारै एक सईकै में जांवते थारै पुसब री एक कळी खिलै—इसौ है थारो धोजै रो कारबार ।

बखत म्हारै हात में नंइ-इण सूं म्हे सगळा बखत री तड़ातड़ी में लाग्या रेवां अर देज करणी म्हांनै सदै'ई नंइ ।

सगळा सोवै जद तूं जागै अर हे म्हारा प्रभु ! देंवते-देंवते ई थारी बखत कट जावै-पण, थारी पूजा री थाळ तो रीतो ई पड़्यो रैवै !

हूं कुवेळा रा थारै कनै आवूं अर म्हारै मन में भी धस्योड़ी हुवै-पण जद हूं थारै कनै दोड़'र आवूं तो जोवूं कै थारो बखत तो कदेई बीतै ई नंइ !

●

तैयांसी
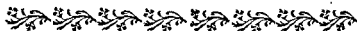
[तोमार सोनार थालाय]

थारै सोनळ थाळ में आज दुखड़ै रै आंसुवां रो लड़चां सवार राखसूं। हे माता! वीं सूं थारै गळै री मोत्यां री माळा गूंथसूं। चांद-सूरज तो थारै पगां री झालर में जड़चोड़ा है पण थारै हिवड़ै माथै तो म्हारै दुखड़ै रो गैणों ई सोवै!

ऐ सगला धन-धान तो थारा ई है। तूं ई बता आंरो हूं कंई करूं। जे देवणो चावै तो दै, अर लैवणो चावै तो लै!

पण दुख तो म्हारै घर री जिनस है, औ तो खरो रतन है—आ तो तूंई जाणै। थारी किरपा रो परसाद दे'र तूं इंनै मान लेवै इणरो मनै अहंकार है!

•

चौरासी

[हेरि प्रहरह तोमारि विरह]

हूं रात-दिन जोवतो जावूं, के थारो विरै-दुख भुवन-भुवन में व्यापै है ! वो कित्ताई रूप धारयां बन, डूंगर, अकास अर समदर में सोवै है !

सारी रात तारै-तारै रै मांय वो पलकां-थाम्यां बोलो-बालो ऊभो रैवै। सावणियै री झड़ में पान-पान में थारो इ विरै-दुख बाजतो जावै !

घर-घर में आज थारो विरै-दुख कित्ती पीड़ कित्तो प्रेम, कित्ती वासनावां, अर कित्ता सुख-दुख रा कामां में भर्‌यो पड़्यो है !

सगळै जीवण नै उदास कर'र, म्हारै कित्ताई गीतां रा सुरां में गळगळ'र झरतो थारो विरै रो दुखड़ो म्हारै हिवड़ै रै मांय भरीज्यां जावै !

छियासी
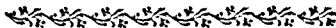
[पाठा इले आजि मृत्युर'दून]

तें आज मौत रै हलकारै नै म्हारै घर रै दुवारै भेज्यो है ! थारो सनेसो ले'र बो ईं पार आय पूग्यो है !

आज री घोर-अंधारी रात में म्हारो हिरदो मांय सूं कांपै तोई हूं हात में दिवलो लियां बारणा खोल'र, घणै आदर-मान सूं बींनै म्हारै घर में लासूं ! आज मौत रै-हलकारै नै, म्हारै घर रै दुवारै भेज्यो है !

हूं हात जोड़'र व्याकळ नैणां रै जळ सूं बीरी पूजां करसूं । बीरै चरणां में म्हारै, प्राणां रो धन सूंप'र, बीरो आरती उतारसूं ।

थारो हुक्म मान'र, बो म्हारै जीवण-परभात माथै अंधारो छोडतो, पाछो जासी परो ! म्हारै सूने घर में, थारै चरणां में बैठ'र, हूं मनै आपनै थारै अरपण कर देसूं ।

आज मौत रै हलकारै नै तें म्हारै घर रै दुवारै भेज्यो है !

●

सित्यासी

[आभार घरेते भार नाह से जे नाह स्मरण]

म्हारै घर में जका नंइ, वा जिनस नंइ जाणो—
जका अठै सूं जावै परी, फेर जोयां ई लाधै नंइ।

हे नाथ। म्हारो घर तो एक छोटी'सीक ठौड़ है। जे कांई हुंवतो तो वठेइ लाधतो, पण कांइ मिलै बद नीं!

थारो घर तो औ अणंत संसार है। हे नाथ! वींनै जोंवतो-जोंवतो हूं अठै थारै कनै आय पूग्यो हूं।
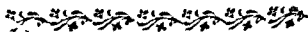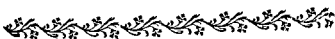
थारे सिझया-पड़ी रै गिगन-तळे ऊभो, म्हांरे नैंणा में जळ-भरचां हूं थारै कानी जोवूं । जठै ना कोइ मुखड़ो दीसे, ना सुख-दुख ई जठै है, अर आसा-तिसना कठैई दीसै नंइ—हूं बठै म्हारै ई-व्याकळ हिवड़े नै ले'र आयो हूं ।

डुवा दे, डुबा दे, थारै दरसणां रै आमीरस में म्हारं ई हिवड़ै नै डुबा नाख ! जिण सूं म्हारै घर में जको इमरत-रस नंइ, उणनै आखै संसार रै मांय समझ'र बोरी मीठी पंपोळ पाय सकूं ।

●
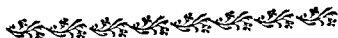
इठ्यासी

[भाड़ा देउनेर देवता]

हे भगन-मिंदर रा देवता ! टूट्योड़ै तार री वीणा सूं अबै थारी वंदणा हुवै नइ । सिझ्या रै गिगन में संख री गूंज में थारी आरती रो सनेसो सुणी-जै नइ । हे टूट्योड़ै देवळ रा देवता ! थारो मिंदर-थिर अर गम्भीर दीसै ।

वसंत-रुत री पू'न थारै सूनै थान माथै रै'र व्याकळ सौरम बिखेरै । विगस्योड़ा फुलड़ां नै थारी पूजा रो अरघ मान'र आ थारै रंग भर चरणां में चढ़ावण सारू लाई है । बांरै विगसण रा समचार, आ पू'न ईं सूनै मिंदर में ले'र आई है !

०

थारो पूजारी तनै बिन-पूज्यां दिन भर उणमणो हुयां किणरी किरपा रै परसादो री भीख मांगतो फिरै।

गोधूळ वेळा जद वन री छाया मे मिलै, जद वो घणा दिनां रो भूखो, विसांयां-लेंवतो, थारै टूटयोड़ै देवळ में फिरतो इ आवे, वो विना-पूजा रैवणियो थारो पूजारी !

हे टूट्योड़ै देवळ रा देवता। कित्तांई ऊच्छव मर कित्ताइ नौरता सूना वीत्यां जावै। दसरावै री कित्तीई नुंवी मूरत्यां घड़ीजै मर विसरजन हुयां जावै-पण हे भगन मिंदर रा देवता। तूं नित-हमेस मण-पूज्यां इ रैयां जावै।

नवासी
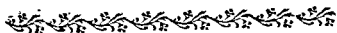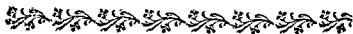
[कोलाहल तो वारन हुल]

हाको-देघो तो छोड़ यो, अबै तो कानां-कांना में इ बात करसूं। अबै तो जीवरी बात कोरी गीतां में इ गा-गार करसूं।

राज-मारग माथै, लोग भेळा हुवै, लेवा-वेची री हाको हुंवतो जावै, मनैं धोळी दोपारै री ईं कुवेळा में वो दिन तें क्यूं बुलायो—ईं सूं तो काम में हरजो हुवै, कंइ ईं वात नैं वो जाणें नंइ ?

आज दोपारै री ईं कुवेळा में म्हारै बाग में फूल अर मंजर्यां नै भलां'इ फूटण दो, अर चावै, दोपारै में इं भंवरा री सोवणी गुंजार हुवण दो।

भलां-बुरां री इण लड़ल में घणाई दिन-बीतग्या— म्हारा ठालप री वेळा रै खेल री सायीड़ो म्हारै हिवड़ै नै आपरै कानी अबार टाणें अर बिना काम इ आज मनैं वो क्यूं बुलावै ईं बात नै वो फकत वोइ जाणें।
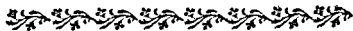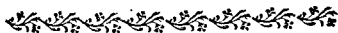
•

नत्वे

[मरण जे दिन दिनेर शेषे]

जिण दिन सिंझ्या री वेळा, मिरतू थारै दुवारै आसी, वीं दिन तूं वींनै किसो धन भेंट करसी ?

म्हारै प्राणां सूं भरयो प्यालो वीरै सनमुख ला'र मेल देसूं-हूं वीनै रीतै हातां वीर करूं नंइ।

बसंत अर सरद री किसीइ रातां किताई सिंझ्या-दिनूंगां वीं म्हारै जीवण में किसोइ रस बरसायो। दुख-सुख री तावड़-छांव सूं परख कर'र वीं कितांइ फळ-फूलां सूं म्हारै हिवड़ै नै भर नाख्यो।

अबै अंइ म्हारो संच्योड़ो धन है। इण दिनां री औ सगळो संचय आज रै चरम दिन हूं वींनै स'जा'र वीरै भेंट करसूं, मिरतू जदै दिन म्हारै दुवारै आसी।

●

इकाणमैं

[भोगो, आभार एड़ जीवनेर]

ए म्हारै जीवण री अंतम पूरणता री साध, मौत ! हे म्हारी मौत । तूं आव, म्हारै सूं वातां तौ कर ।

जलम-भर तौ थारै तांई हूं नित-नित जाग्यो, अर थारैई खातर दुख-सुख री पीड़ा रौ भार सैंवतो रैयो । मौत ! हे म्हारी मौत ! तूं आव, म्हारै सूं वातां तौ कर !

जीवण में मनै जको मिल्यौ, जको हुयौ अर जका म्हारी आसा ही जं वै सगळा अणजाण्यां ई थारै कानी भाजता रैवै ।

थारी एक मुगली दीठ पड़तां ई हैं मूं म्हारो मिलणो हुसी। अर थारो जीवण-संगी हुय'र सदा-सदा हूं थारै सारै हुय जासूं।

हूं म्हारै मनडै में थारै खातर परमाळा गूंथ्या उड़ीकूं, कद थूं मुगडै माथै मुळकतो लियां बीद रै भेस में सज'र आसो।

बी दिन ना तो म्हारो कोई घर रैवै ना कोई आपरो-परायो भेद इ रैवै अर सूनी रात ई सळवळी सी थारै पगो सूं मिलण हुसी। मौत! म्हारी मौत! तू आव म्हारै सूं बातां तो कर।

●

वाणमें

[एक दिन एद देला हूवे आवे सेप]

एक दिन भो देसणो ई सेस हुय जासी, अर म्हारे नैणां माथै पलकां रा आखरी पड़दा पड़ जासी। दूजां दिनां हमेसा दंइ रात नै तारां में जोवतो रैसूं अर दिनूंगे पंछीड़ां रा बोलां में जगतो रा लोग जागसी। ई संसार रो खेल, चिड़कल्यां री चोंचाट में चालतो जासी, अर घर-घर में सुख-दुख रै सागे वखत बीतयां जासी।
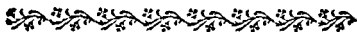
थीं बात नै बिरमांड रै गीत में याद कर'र आज हूं इंद्यांळू नैणां सूं जोंवतो इ जासूं। म्हारी आंख्यां सूं हूं जको कइ जोवूं बो हीएर नंइ अर आज मनै सगळी जिनसां दुरलभ लागै।

धरती माथै थोड़ो'सीक ठोड़ ई दुरलभ लागै, अर ई जगत में बिरथा जीवणो ई दुरलभ लखावै। जका चीज हूं पाय नंइ सक्यो, अर जका मनै मिली उण में जिण नै हूं होएा अर बिरथा जाण'र चांवतो ई नंइ, बंइ मनै दे दे।
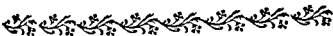
●

तोणमें

[पेपेवि पुटि विदाय देहो, भाइ]

मनै छुट्टी मिलगी है, अबै मनैं सीख दो। म्हारे भायां। हूं सगळां रै पगां लाग'र जावूं।

म्हारै घर री चाबी हूं पाछी देवूं, घर ना घर मैं इ कब्जैं मैं राखूं-सगळां सूं आज सनेव रा बोल चावूं।

घणांइ दिनां म्हारां पाड़ोसी रैया जित्तो दियो बीं सूं बेसी लियो।

परभात हुयग्यो, रात बीतगी, घर सूणै में पड़यै दिवलै री बाट इ बडी हुयगी-हेला पाड़ीजै, जिण सूं अबै हूं जावूं।

●

चौणमै
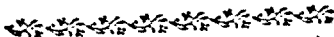
[एवार तोरा आभार जाबार वेलाते]

म्हारा साथीड़ां ! म्हारी बीर हुवण री वेळा मे थे सगळा इ जै-जै-कार करो ! परभात रै सोवणै रंगां में आभो राचग्यो, अर म्हारो मारग इ फूटरो हुयग्यो ।

अरे आ मत सोचो ना, कै वठै ले जावण नै म्हारै कनै कंइ है। तो ई हूं म्हारै रीतां हातां म्हारै आकळ-व्याकळ जीव नै लियां जावूं ।

हूं आज परणीजण री पोसाक में सेवरो पैरयां जासूं, म्हारो भेस जातरी रै भगवां जिसो हुवै नंइ । म्हारै मारग मे घणाई दुख-संकट आसी, हूं म्हारै मन में बांरो कंई भी मानूं नंइ ।

जद म्हारी जातरा पूरी हुसी, सिंझया रो तारो चमकण लागसी, अर वीं वेळा दुवारै माथै बंसरी रै मधुर सुरां में पूरवी राग बाजण लागसी ।

•

पिचाणमें

[जीवनेर सिद्धारे पशिनू जे दाणे]

जोवण रै सिंघ-दुवारै नै पार कर'र जिण खिण में हूं ईं इचरज भर्‌यै संसार रै मोटै भुवण में पूग्यो, बीं खिण मनै कंइ ठा नंई ही ।

अरे ! बा किसी सगती ही जकै आपरै-अगम-भेद री गोदी में आधी रात रा घणघोर बन में खिल्योड़ी कळी दंइ मनै विगसा दियो ।

जदे परभाते माथो उठावतां ई आंख्यां खोल'र जोयो तो धरती सोनै री किरणां सूं गूंथ्योड़ो सीलो चीर ओढ्यां ही, जद मन में जाण्यो, कै संसार सुख-दुख सूं बण्योड़ो है । पर इणरा मण-पार भेद पलक-मारतां हिवड़े में मायड़ री गोद ज्यूं मनै एकळपे जाण्या लागण लाग्या ।

इण घर ग्यान सूं परे बीं महा-सगती म्हारै सागर मायड़ी री मूरती धारण करी ही ।

●

छिनमैं

[जावार दिनै एइ कयादि]
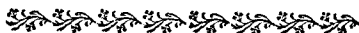
म्हारी सोल रै दिन हूं भाइ बात कैंवतो जावूं, कै जको मैं जोयो, भर पायो बींरो कंइ जोड़ इ न'इ।

ज्योत रै इं समदर में जको, सत्दळ कंवळ सोवै बींरो रस पियो हूं धिन धिन हुयो। सोल रै दिन भाई वात जणा-जणा'र कैंवतो जावूं।

इं संसार-रूपी रम्मत-चोक में हूं घणाई खेल कर्यं। भर म्हारी दोनूं आंख्यां बीं निराकार भालम-रुप नै जोवै। जकै री परस हुयै नंइ। बीं पंपोळ नै हूं म्हारै सगळै भंग-अंग भर काया में धारूं।

जे बै इंनै भठै'ई भंत करणी चावै तो भलेंई करो। सोल री वखत हूं भा ई बात कैंवतो जावूं।

●

सौ

[रूपसागरे डुब दियेछे]

रूपहीण रतनां नैं पावण री आसा में हूं रूप रैं समदर में गोता लगायां जावूं ! म्हारी ईं जरजर नाव नैं लियां, घाट-घाट माथैं हूं घूमतो रैवूं नंइ ! लैरां रा झपाटा खावण री, बखत बीतग्यो—अबे तो ईं इमरत-कुंड रे तळै में जा'र अमरपद पावण खातर, हूं मरणो चावूं ।

जका गीत कानां सूं सुणीजै नंइ, बे गीत जठै नितनित बाजता रैवै—प्राण री वीणा हात में लियां, हूं बीं पताळ री सभा में जासूं !

ईं वीणा नै हूं, अमर-संगीत रा सुरां सूं बांध'र आपरैं आखरी गीत में जद आ कूकण लागसी—हूं बीं सूनी वीणा नै बीरैं सांत चरणां में लेजा'र मेल देसूं !

●
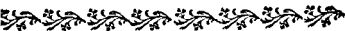
एक सौ एक

[गान दिये जे सोमाय खुंजि]

म्हारे गीतां सूं इ हूं तनै घणां दिनां सूं म्हारै हिवड़े रै मांय-वारै जोंवतो रैयो !

म्हारा ऐ गीत मनै घर-घर रै दुवारै-दुवारै लेयग्या- हूं भां गीतां सूं इं संसार रो परस भर अनुभो करूं।

भां गीतां मनै कित्तीइ सीख दी है, कित्ताइ गुपत मारग देखाया, भर म्हारै हिरदे-गिगन रा कित्ताइ तारां सूं म्हारो जाण-पोण कराई।

इं दवरज-भर्‌ये सुख-दुख रै देस में म्हारा ऐ गीत कित्ताइं अगम लोकां रै मांय मनै घुमातो फिरया- भबे ऐ गीत, सिभ्या रो वेळा, मनै कंइ टा किसै घर री पोट मायं लिया'ग्या !

●

एक सौ दो

[तोमाय चिनि बोले आमि]

हूं संसार में इण वात रौ गरब करूं, कै तनै ओळखूं ! म्हारा आंक्योड़ा चितरामां रै मांय, लोग थारी अणपार झांक्यां देखै। घणाइ जणां मनै आ-आ'र बूझे—'औ कुण है' ?
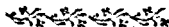
पण, वीं वेळा हूं कंइ कंवूं ? बोल इ नीसरै नंइ! हूं तो पाछौ कंवूं, 'कंइ ठा, हूं कंइ जाणूं ?' —तूं सुण परी हंसण लागै, अर लोग मनै दोस देंवता इ जावं परा !

घणीइ वातां में हूं थारा गीतां में गावूं ! पण गुपत वातां नै म्हारै प्राणां में लुका'र राख सकूं नंइ !

जद वे कित्ताइ-जणां मनै आर बूझै, 'तूं गावे जकै रौ कंइ अरथ ई है ?'—वीं वेळा, हूं कंइ कंवूं ? कंइ पण बोल सकूं नंइ ! जद फकत आ'ई कंवूं, 'अरथ कंइ बतावूं ?'

वे सगळा लोग हंस-परा जावै परा, अर तूं बैठो-बैठो मुळकतो इ रेवै !

'हूं तनै जाणूं नंइ, पेचाणूं नंइ', बोलो आ बात हूं कंवूं पण कियां ? जद, पळ-पळ में तूं म्हारै कनै आवे अर छळ कर-कर जावे परो !

चांदणी रात रा पूरण-चंदरमा गूं जद थारो बादळी रो गूंघटो छेड़ै हुवै, वीं वेळा म्हारी आंख्यां रा कोयां में तूं इ तूं दीसै। म्हारो हिवड़ो धचानचक डोलण लागै, अर म्हारा नैण, बावळ-ब्यावळ हुय जावै!

तूं थारा पगल्यां नै म्हारै हियड़ै में कचूंभी भरतो धमार्‍या जावै! हूं पळ-पळ में तनै म्हारी बांहां री डोर में बांधणी चावूं—अर सदा-सदा सारू गीतां रा सुरां में बांध'र राखणा चावूं! तूं पानड़ां रा सोनळ छंदां रै मांय बसयोड़ो है, अर बंसरी रै चंवळा सुरां में समायोड़ो है। तोर अै संसार वेम करै कै, तै मनै कांई दे दियो ?

थारो जका मुगी हुवै सा ई कर! कह दे, मन है! पण म्हारै मनड़ै नै मोरपो आव! तनै खोजणूं चावै नंद, पण म्हारा प्राण निच-निच पुळकता ह जावै!

●